भोजपुरी के नये गीत

और

गीतकार

संपादक

राहगीर

उदय प्रकाशन

वाराणसी

प्रकाशक
हिन्दी प्रकाशन, वाराणसी

प्रतियाँ ११००

प्रथम संस्करण
संवत् २०२० वि०

मूल्य ६–५०

प्रमुख विक्रेता
उदय प्रकाशन
वाराणसी

आवरण
मधुर चित्रकार

मुद्रक
श्री मगन सिंह
प्रकाश प्रेस
मध्यमेश्वर, वाराणसी

BHOJPURI KE NAYE GEET
AUR
GEETKAR, Poetry

By RAHAGIR Price Rs. 6-50

Stockist—UDAY PRAKASHAN
VARANASI

समर्पण—



हिंदी के प्रसिद्ध व्यंग्यकार

'आज' साप्ताहिक

के

लोकप्रिय संपादक

मित्रवर,

श्री मोहनलाल गुप्त

'भैयाजी बनारसी'

को

समर्पित

शुभाशंसा

भोजपुरी कविताओं का यह दूसरा संकलन राहगीर जी प्रस्तुत कर रहे हैं। इसके पहले भी इन्होंने एक संकलन पाठकों को दिया था। इसमें उन अनेक कवियों की रचनाएँ हैं जिनकी रचनाएँ पहले संग्रह में नहीं हैं।

आंचलिक बोलियों में भोजपुरी बोली का ऊँचा स्थान है। यह जानकर प्रसन्नता होती है कि वह साहित्य के रूप में अब हमारे सामने आ रही है, इसका रस, इसकी मधुरिमा, इसकी मिठास किसी से छिपी नहीं है। हृदय में इसकी रचनाएँ तुरत घर कर लेती हैं। ब्रज, अवधी, मैथिली की भाँति यह भी एक क्षेत्र की बोली है और शायद उन सब क्षेत्रों से अधिक इसके बोलनेवाले हैं। हमारे राज्य और देश की भाषा तो हिंदी खड़ी बोली के रूप में है। किंतु इसका उससे कोई संघर्ष अथवा लाग-डाँट नहीं है। हमें इसका खेद है कि अधिकांश खड़ी बोली की कविता जनता से दूर चली जा रही है। इन रचनाओं में पाठक देखेंगे कि हमारे भारत के पूर्वी उत्तर प्रदेश

तथा पश्चिमी बिहार की आत्मा बोल रही है। उसके प्राण को स्पर्श कर रही है।

जो रचनाएँ हमारे सामने हैं वह मानो प्रकृति के उद्यान के स्वाभाविक फूल हैं। माली के लगाये कलम नहीं हैं। इन रचनाओं में प्रकृति वधूटी में रोमांस की आत्मा बोल रही है। सभी विषय प्रकृति से लिये गये हैं। हमारी ऋतुएँ, हमारे खेत और खलिहान, हमारे साँझ सबेरे, हमारी दिन-दोपहरी, हमारे हवा-पानी को सजीवता प्रदान की गयी है। यह रचना उन्हें भी आनंद दे सकती है जो उषा की छाँह में हल-बैल कंधों पर लेकर खेत की ओर चलते हैं, जो चिलचिलाती धूप में ऊख में पानी चलाते हैं और उन्हें भी जो बिजली के लट्टू के नीचे बसों की खड़खड़ाहट और पेट्रोल की सुगंधि का आनंद सिमेंट की छतों के नीचे लेते हैं।

मैं भाषा के आधार पर धरती को छोटे-छोटे टुकड़ों में विभाजित करने का समर्थक नहीं हूँ। हमारा देश एक है और इतना ही नहीं मानव जाति एक है। भाषा, प्रांत, देश सब एक माला की छोटी बड़ी मनिकाएँ हैं। प्रत्येक मणि सुंदर हो, सुथरी हो इससे माला की शोभा है। इसी भाव से मैं इस संकलन का स्वागत करता हूँ। इस संकलन द्वारा हमारे नगरनिवासी असली भारत की आत्मा को समझेंगे और उसके और निकट आयेंगे। यही मेरी शुभकामना है।

काशी
१५–१०–६३

कृष्णदेव प्रसाद गौड़
'बेढब बनारसी'

भूमिका

श्री राहगीर भोजपुरी जनपद के मूर्धन्य गीतकारों में से हैं। इस बोली के क्षेत्र में उनकी क्रियाशीलता सराहनीय है। इस दिशा में निजी कविक्रिया के अतिरिक्त पाठकों के लिए जो उन्होंने भोजपुरी गायकों की कविताएँ दो-दो संग्रहों में एकत्र कर दी हैं उससे हम जैसों का बड़ा कल्याण हुआ है। प्रस्तुत संग्रह इस प्रयत्न की दिशा में दूसरा है। इसमें भोजपुरी के बयालीस कवियों की कवितायें संगृहीत हैं। स्वयं कविहृदय होने से श्री राहगीर ने कविताओं-गीतों का संचयन मनहर किया है।

नागरिक कविताओं के शिल्प और परवश मौलिकता से ऊब कर जो संग्रह की ओर आकृष्ट होगा, मैं निश्चयपूर्वक कह सकता हूँ, उसे निराशा न होगी। जानपदिक बोलियों की स्वतः प्रमाण माधुरी अपनी ताजगी से निःसंदेह भाषा के राजमार्गीय प्रतीकों और पुनः पुनर्जायमान भावों की अमौलिक नीरसता

मिटा देगी। संग्रहीत पदों-गीतों में इतनी विभिन्नता है कि संग्रह में बहुरंग चमत्कार प्रस्तुत हो गया है।

'प्रतीक्षा गीत' में कवि की चेतावनी प्रतीक्षिका के माध्यम से नितांत कोमल बन पड़ी है। आँचल चाहे रोते-रोते भींग जाय पर आँखों में कहीं काजर की कोर न भींगे, उसे बचा रखना है—

भींजेला अँचरा त भींजे हो
कहीं भींजे न कजरा।
टूटे तरइया त टूटे हो
कहीं टूटे न असरा।

आसमान अगर टूटकर गिर पड़ा तो कुछ नहीं बिगड़ने का, पर जो आस टूटी तो जीवन का धागा ही टूट जाएगा।

शरद का वैभव तो जैसे संग्रह में बाँध तोड़कर बह चला है। अनेक गीत असाधारण भंगिमा के साथ उस दुर्दिनांत की सुषमा को व्यक्त करते हैं। एक सहज प्रवाह की ध्वनि सुनें—

झिर झिर बहल जोमाइल नारा लवटल नदी बिसास,
सिहरल सून अरार, निछाने फूलल गहगह कास।
गुलगुल पलिहर पर तरनाइलि आइलि फफनल घास,
हँसि हँसि हँसुआ चले गुजरिया बतरस भरल लहास।

आलोचक के लिए समानांतर पंक्तियाँ खोज निकालना कठिन हो जाएगा। निदाघ के निर्दय आघात का एक निरूपण इस प्रकार हुआ है—

माकति चललि किरनि अगिआइल बान्हि हवा के पाँखि,
खेह उड़लि बढ़ि देह बुड़लि, भरि धूरि भठाइलि आँखि।

सुबह फिर भी अपनी जादू की छड़ी जब चराचर पर फेर देती है तब गाँव के कवि में भी हुलास भर आता है—

भोर भइल भेंगरजवा बोलल, डोललि मलय बयारि,
मरलसि गमक परोरि जुड़ाँसी जादू, लिहलसि भोरि।
अलगल झाँप अन्हार, दूर से धाहल साफ सवेर,
उभरल अइसन चित्र नयन का आगा सरग अनेर।

बंगाली अपने गीत में मिथुन की परवशता भर लाता है जब निशांत का दर्द सहवास के चिह्नों के साथ मदिर प्रिया को मुखर कर देता है, छिपा राज तब धीरे-धीरे खुल पड़ता है। झरझर बरसती 'जमुनी बदरिया' का चीर हटाकर सौदामिनी नायिका का झाँकना निश्चय गाँव के दीपक के लिए कुछ कम आपज्जनक नहीं—

झरझर बरसेले जमुनी बदरिया
ओरी से बँड़ेरी ले भिंजाय
मेघवा के पट टारि झाँकेले बिजुरिया
दियरा चँवर मुसकाय॥

और प्रसादप्रवण बहिरंग में जैसे घनी सुघराई धारे जब नीचे की पंक्तियों पर नजर गई तब ठगा-सा रह गया। इतने सहज, प्राय: परिधान-मंडन-हीन शब्दों में भावों की इतनी ताजगी, निरस्त्र चोट करनेवाली अभिनव वाणी की अजस्र सत्ता—

फरकल होठ नथियवा ठरकल
ओरी तरे जुड़ाइल।
सखो अँगनवा ठाढ़ दुइज के
निकलल चान पराइल॥
टिकुली साटि सरेह फुलाइल
सेनुर माँगि भराइल
सखी अँगनवा ठाढ़ दुइज के
निकलल चान पराइल॥

रागानुराग के इस निर्बंध मधुवर्षण में मात्र एक करुण विराग जैसे संसार की वास्तविकता की ओर बरबस खींच लेता है। 'रमरजिया' का सबल चित्र खड़ी बोली में भी अपना समानांतर निराश खोजेगा। जैसे हिया में एकांत व्यथा का पच्चर ठुक जाता है—

जनमें उनके बपसी मरलें गवना होते माई
सेजिया चढ़ते पिया गुजरले एइसन करम कमाई।
ससुरे उनकी कोइला बरिसल नैहर भइल अन्हरिया।
बोझा भइलि जवानी दिन-दिन बैरिन भइलि उमरिया ॥

वसंतागम में जैसे वनांत नवसज्जा से रुज उठता है, वन्य कुसुमों की सुषमा उसके तन पर छा जाती है, और उस तन पर कुसुमों के अनंत रंगों का स्रोत तूलिका की परस से फूट पड़ता है, वैसे ही हिंदी के नागर कुसुमनिचय पर भोजपुरी की उल्लसित भावधारा इस संग्रह के गिरिकांतार से फूट पड़ी है! निःसंदेह इसके गीत सहृदयों के मर्म छू लेंगे।

काशी,
१६–१०–६३,

भगवतशरण उपाध्याय

दो शब्द

भोजपुरी का परिचय देना आवश्यक नहीं रह गया है क्योंकि इसकी लोक-प्रियता अपनी सीमा को पार कर चुकी है। इसकी सरसता जनमन में गहराई से उतर चुकी है। नवीन उपलब्धियों के साथ अनेक विधाओं में भोजपुरी साहित्य का निर्माण अबाध गति से हो रहा है। हिंदी की प्रमुख पत्रिकाओं, पत्रों एवं संग्रहों में इसकी रचनाएँ प्रकाशित हो रही हैं। पद्य के साथ भोजपुरी गद्य का भी प्रचार-प्रसार तेजी से हो रहा है। 'आज' इस दिशा में प्रशंसनीय कार्य कर रहा है। प्रसिद्ध साप्ताहिक 'धर्मयुग' भी अपने पंखुरिया स्तंभ में भोजपुरी कवियों की रचनाएँ प्रकाशित कर रहा है। कलकत्ते से प्रकाशित होनेवाले 'विश्वमित्र' तथा 'सन्मार्ग' का सहयोग उल्लेखनीय है क्योंकि इन पत्रों के माध्यम से भोजपुरी भाषा का प्रचार वर्मा, श्याम आदि राष्ट्रों में हो रहा है।

भोजपुरी लोकगीतों के संग्रह भी प्रकाशित हो रहे हैं। किंतु खेद के साथ कहना पड़ रहा है कि कतिपय व्यावसायिक संघों ने 'रेकार्ड' बनवाकर आर्थिक लाभ के व्यामोह में लोकगीतों की मौलिकता नष्ट कर दी है। लोक-गीतों की सरस स्वाभाविक धुनों को विदेशी तर्ज देकर राष्ट्रीय निधि को क्षति पहुँचाने का यह आचरण सर्वथा निंदनीय है। आजकल भोजपुरी चित्रों की धूम मची हुई है। भोजपुरी के प्रचार-प्रसार में यह एक शुभ लक्षण है किंतु इस दिशा में भी आवश्यकता इस बात की है कि भोजपुरी क्षेत्र के जो गणमान्य कलाकार फिल्मों में कार्यरत हैं, वे ही यदि भोजपुरी चित्रों का निर्माण करें तो स्वाभाविकता—जो चित्रों को लोकप्रियता प्रदान करने में प्रमुख अंग होती है—सुरक्षित रह जाय। यदि किसी अन्य क्षेत्र का कलाकार भोजपुरी गीत लिखने का प्रयास करेगा तो उसे सफलता नहीं मिल सकेगी। परिणामस्वरूप भोजपुरी गीतों को विकृत रूप में लोगों के कानों में उतरना पड़ेगा। इधर भोजपुरी के चित्रों में जो गीत दिये गये हैं वे प्रायः लोकगीत तथा भोजपुरी के अमर गायक भिखारी ठाकुर के गीत हैं किंतु इन गीतों के कुछ शब्दों और धुनों को बदल कर फिल्मी गीतकारों ने अपने नाम से प्रचलित करने का जो दुस्साहस किया है उसकी जितनी भर्त्सना की जाय थोड़ी है। भोजपुरी चित्रों के निर्माता यदि इस तथ्य से परिचित हो जायँ तो निःसंदेह इन चित्रों को सर्वाधिक लोकप्रियता प्राप्त हो सकती है।

हिंदी के कुछ विद्वानों ने भोजपुरी भाषा के व्यापक क्षेत्र को संकीर्णता प्रदान करने में अपनी विद्वत्ता का अपव्यय किया है। इन विद्वानों से मेरा नम्र निवेदन है कि हिमालय की तलहटी से सरगूजा, पलामू तथा छत्तीस गढ़ तक इस भाषा का प्रसार है। क्षेत्र को लेकर विवाद उपस्थित करना उपयुक्त नहीं है। भोजपुरी की प्रगति को कोई भी षड्यंत्र अवरुद्ध नहीं कर सकता।

मैंने सन् १९५८ ई० में 'आधुनिक भोजपुरी गीत और गीतकार' शीर्षक से भोजपुरी के ४१ कवियों की रचनाएँ—उनके संक्षिप्त परिचय और चित्र के साथ—

प्रकाशित की थी। इस पुस्तक के प्रकाशन के पश्चात् कुछ प्रतिनिधि कवियों की रचनाएँ भी प्राप्त हुईं। इन कवियों के साथ भोजपुरी के तरुण गीतकारों को प्रकाश में लाने के ध्येय से 'भोजपुरी के नये गीत और गीतकार' नामक संग्रह को प्रस्तुत करना पड़ा, जो आपके संमुख है। इसमें भोजपुरी की तीनों उपबोलियों—काशिका, बल्लिका, मल्लिका—के कवियों की रचनाओं को संकलित किया गया है। इसे पहले ही प्रकाशित हो जाना चाहिए था किंतु राष्ट्रीय संकट के कारण इस ओर से ध्यान हटा लेना पड़ा था। इस पुस्तक में कवियों का चित्र न दे सका जिसका मुझे बड़ा दुःख है। प्रयास करने पर भी कुछ ही कवियों के चित्र उपलब्ध हो सके। अतः मुझे वंचित रह जाना पड़ा। यदि इसका द्वितीय संस्करण प्रकाशित करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ—जिसकी संभावना मुझे नहीं है—तो समस्त कवियों के चित्रों से उसे अलंकृत करूँगा।

आभार

इस संग्रह के सभी मित्र कवियों के प्रति आभार प्रकट करना मैं अपना पुनीत कर्तव्य समझता हूँ तथा आशा करता हूँ कि इनका सहयोग मुझे सदा-सर्वदा प्राप्त होता रहेगा।

आदरणीय बेढब जी ने कृपापूर्वक शुभाशंसा लिखकर मेरा उत्साहवर्द्धन किया है एतदर्थ आभारी हूँ।

हिंदी विश्वकोश के संपादक आदरणीय डाक्टर भगवतशरण जी उपाध्याय ने अत्यंत व्यस्तता के क्षणों में भी इस पुस्तक की भूमिका लिखकर मेरे ऊपर जो महती कृपा की है उसके लिये मैं निष्ठापूर्वक कृतज्ञ हूँ।

इस संग्रह को प्रस्तुत करने में पं० रामबली पांडेय ने जो सहयोग दिया है उसे मैं जीवनपर्यंत विस्मृत नहीं कर सकता।

भोजपुरी की समृद्धि में जो लोग कार्यशील हैं उनके प्रति भी मेरी निष्ठा है।

सर्वश्री चंद्रशेखर मिश्र, रत्नाकर पांडेय, जगदीशचंद्र मिश्र तथा भोलानाथ मिश्र को धन्यवाद क्या दूँ ये लोग तो छोटे भाई हैं।

हिंदी प्रकाशन के व्यवस्थापक विशेष धन्यवाद के पात्र हैं। अंत में मैं श्री मगन सिंह और उनके सहयोगियों को भी धन्यवाद देता हूँ जिन्होंने इस पुस्तक को शीघ्रतापूर्वक मुद्रित किया।

शारदीय नवरात्र,
संवत् २०२० वि०
दशाश्वमेघ,
वाराणसी।

—राहगीर

अनुक्रम

जन्म—संवत् १६७३ वि०।

श्री तारकेश्वर उपाध्याय

स्थान—नरही, बलिया।

शिक्षा—एम० ए०, बी० टी०।

संप्रति जनताजनार्दन इंटर कालेज,
गाँधी नगर, गाजीपुर के प्राचार्य।

साहित्य—आपकी निम्नलिखित पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं—

१—पथपर (महाकाव्य)।
२—युगकिरन।
३—कामेश्वर धाम।
४—वंदिता।

खड़ी बोली तथा भोजपुरी की पत्रिकाओं में आपकी रचनाएँ प्रकाशित होती रहती हैं।

शरद चलि आइल

भागलि हँसति बयारि डगर मुसुकाइल,
बादरि लिहलसि चैन शरद चलि आइल।
गावे लागल ताल तलैया नाचलि,
कोई कइके सिंगार नचावै लागलि
बकुला पाँखि पसारि बहकि अगराइल,
चूँमिके चान तिरिछिवा प्रान अघाइल
छोंड़िके अइसन राज पिया क पराइल
रोटी का बड़ काज ! कि प्यार भुलाइल ?
देखल खरह पातन पर सुबरन छाइल।

फूलि झरेला सिंघाड़ा कि सेज डसाइल,
धरती के बड़ भाग गमकि गदराइल;
खँचियन आजु तरैया-छवि छितराइल
कापड़ का बड़ काज कि राज बिलाइल,
देखल लाज रखे से लाज छिपाइल
बिसवलि घाम चुनरिया आग बुझाइल,
मातलि मिलत कोदइया बड़ बउराइल,
दूध क धोवल अँजोरिया घर भर आइल
हर क जोतल पलिहरवा रूप नहाइल।

आइलि कौन विपतिया
पिया ले पराइलि,
भागलि हँसति बयारि
शरद चलि आइल।

●

बादरि = बादल। लिहलसि = लिया। कइके = करके। बकुला = बक, एक श्वेत रंग का पक्षी। अगराइल = प्रसन्न हुआ। तिरिअवा = त्रिया, स्त्री। अघाइल = तृप्त हुआ। पराइल = भागना। ब्याज = बहाना। भुलाइल = भूल गया। खरह = तृण, घास। डसाइल = बिछाई गई। गदराइल = फलों से लद गई। बिलाइल = नष्ट हो गया। बिसवलि = कम हो गया। कोदइया = कोदो नामक अन्न। पलिहरवा = पलिहर, वह खेत जो बरसात में बिना कुछ बोये केवल जोतकर छोड़ दिया जाता है। लें = लेकर। पराइलि = भाग गई।

जिनिगिया क दाम

का होई जिनिगिया क दाम हो,
सरी ना जो लोगवा क काम हो।

खाइल एको काम न अइहें,
कोठा कोठी सब ढ़हि जइहें,
सोना चानी माटी होइहें,
माटी माटी में मिलि जइहें,

पइहें जानवाँ में जान न परान हो,
ना होई जो जिनगी क दाम हो।

देखऽ फूल ई फूलाइल,
एकर इत्तर तेल कढ़ाइल,
जेमें वड़ मनई अझुराइल,
मँहगा दाम पर विकाइल,

कहऽ तोहार अइसन चाम हो,
कइके का होई आराम हो।

जवना देसवा में चलि जइबऽ
कहीं नाहीं पहिचनइबऽ
माई वाप के हँसइबऽ
एही खाने अइवऽ जइबऽ

होई ई जिनिगिया हराम हो,
कह कहिहें का तनी राम हो।

●

जिनिगिया = जिंदगी। सरी न = पूरा नहीं होगा। कढ़ाइल = काढ़ा गया, निकाला गया। जेमें = जिसमें। मनई = आदमी। अझुराइल = उलझ गए। अइसन = ऐसा। जवना = जिस। खाने = स्थान।

जन्म—सन् १९०२ ई० ।

सत्यनारायण केसरी 'सौरभ'

स्थान—डुमराँव, शाहाबाद ।

शिक्षा—हिंदी, अंग्रेजी, बँगला का अच्छा ज्ञान ।

साहित्य—केसर के फूल (काव्य) शीघ्र ही प्रकाशित होगा । कविता तथा निबंधलेखन में आपकी विशेष रुचि है ।

बसंत आगमन

आहट देत रहे फगुनाहट, दौरि दूअरिले झाँकि के अइलीं।
भौंरा के गीत रहे भरमावत, बाहर ना कोई गावत पैलीं॥
पीव ना कूकल कोइली कूकलि, कू कहिके हम खूब लजइलीं।
साल लगाई बसंत ई आईल, आइल ना पिव धोखे में गइलीं॥

होरी

आईल होरी अबीर गुवाल ले रंग उमंग खुसी ना समाता।
लाख जवाल हजार बवाल में, आजु सभे नया रंग रँगाता॥
कोई खदेर ठहाका लगावत, भागि के कोई, कहीं खीसियाता।
होरी से हारि छिपे के जे चाहत, बेसी गुलाल वोही के मलाता॥

२

जीवन के झउँझार वयार में, जैसे हिले मन रूख के पाता।
नून वो तेल लुग लकड़ी के हो, कूरे कभी एक दीनों का जाता॥
नाक नथाइल, गोड छनाइल, बान्हल बा पगहा छपिटाता।
लेकिन दूख से बड वा आदिमीं, दूख में भी सुख से मुसुकाता॥

३

लाल पलास से लागल आग हो, लाल पलास से आग बुताइल।
पी कहाँ सूनि के केहु जुड़ाइल, केहु के प्रान में हूक समाइल॥
होरी के सोर हँसी से खिले कोई, कोई के होरी में मूँह सूखाइल।
केहु के रंग में चंदन घोरल, केहु के रंग में आगि घोराइल॥

४

लाल बा गाल हो, लाल गुलाल बा,
लाल बा ओंठ जिया ललचाइल।
जेकर राह निरेखलीं सालन,
साँचो, उहे अपने चलि आइल॥
एक हुलास अकास बतास से
आके मोरा मनवा में सँमाइल।
ले अँकवार हिया अगराइल
आइल होरी हो आइल आइल॥

लें = तक। पैलीं = पाया। पीव = प्रिय। साल = शूल। जवाल = झंझट। बवाल = बखेड़ा। खदेर = दौड़ाकर। खीसियाता = नाराज होता है। बेसी = अधिक। वोही के = उसी को। झँउझार = झंझट। रूख = वृक्ष। पाता = पात। लुग = कपड़ा। पगहा=जानवरों को बाँधने की रस्सी। जुड़ाइल = तृप्त हो गया। केहु = कोई। जेकर = जिसकी। निरखलीं = देखा। उहे = वही। हुलास = उत्साह। बतास = वायु। अगराइल = प्रसन्न हुआ।

जन्म—१ दिसंबर सन् १६१६ ई० ।

श्री लक्ष्मीशंकर त्रिवेदी

स्थान—नरही, बलिया ।

शिक्षा—साहित्यरत्न ।

साहित्य—आप जिला श्रमजीवी पत्रकार संघ के अध्यक्ष हैं। पत्रकारिता तथा साहित्यरचना में आपकी विशेष रुचि है। आपकी निम्नांकित रचनाएँ प्रकाशित हैं—

१—मधुरिमा (गीतसंग्रह, १६५७) ।
२—सोने की ओधी (लोककथा-संग्रह, १६५८) ।

खड़ी बोली तथा भोजपुरी की रचनाएँ विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित होती रहती हैं ।

आइल शरद चान मुसुकाइल,
धरती पर मोती छितराइल ॥
कोना कोना सजल प्रकृति के।
गाँवे गाँवे साज सजाइल ॥

बिहँसल ताल तलैया सगरे,
हींड़ल जल थहराइल।
खुलल कमल के आँख मुदाइल,
पुरइन पात सजाइल ॥

ढहरि चिक्कन भइलि खेत के—
पलिहर सबे जोताइल।
घनर घनर अब घंटी बाजे,
गेहूँ चना बोआइल ॥

हर सिंगार ले चलल सनेसवा,
रतिया अति अगराइल।
कल्ले कल्ले बहल बयरिया,
धियना दीप बराइल ॥

कोहराँ के अब जगल भाग बा,
तरजुई आ जाँत बिकाइल।
लरिका लरिकी खेले धूरि से,
धुधुका सबद सुनाइल ॥

बरसा गइल पिया बिनु हहरत,
स्वाति - सनेस सुहाइल।
लीपि पोति घर चिक्कन भइले,
हियरा तनिक जुड़ाइल ।।
आइल शरद चान मुसुकाइल ।।

❁

चान = चाँद। सगरे = सब। हँडल = मटमैला। थहराइल = स्थिर हुआ। मुदाइल = वंद हो गई। डहरि = मार्ग, रास्ता। पलिहर = वह खेत जो बरसात में विना कुछ बोए केवल जोतकर छोड़ दिया गया हो। सनेसवा = संदेश। अगराइल = प्रसन्न हुई, खिल गई। कल्ले-कल्ले = धीरे-धीरे। वयरिया = वायु। घियना = घी का। कोहराँ = कुम्हार। तरजुई = मिट्टी का तराजू। धुधुका = मिट्टी का वाजा। सनेस = संदेश।

जिनगी के फेड़वा से हँसि हँसि,
खेलले सुंदर मधुरितु फाग।

जब से बहल हवा पछुआई,
झरल पुरनका पीयर पात।
कँछि कँछि बा बौराइलि,
फुलवा मातल सगरे गात॥
भनकत चलल झुंड भँवरन के,
चहुँ दिसि गूँजल सरगम राग॥

नभ से उतरल लाल किरिनियाँ,
पनियाँ में सजलसि झीनी चुनरिया।
पुरइन पात सजग होइ गइली,
हँसल कवँल के कोमल दुनिया।

खेलन चलले हंस बलकवा,
जागल प्रकृति नटी के भाग॥

भोरे गुलाब गुलाल उड़ावे,
तितली पियर धजा फहरावे।
टेसू फूलल फूलल सेमरवा,
सुगवा के मनवाँ भरमावे॥

धरती छोर अकासे उड़ले।
बन्हल रूप का ताग॥

धीरे बहली मलय बयरिया,
गमगम गमके सगरे डगरिया।
नाम बरन के रूप धूलि के,
सबकर भइली एके डगरिया॥

राधा के मोहन मिलि गइले।
बिरह बिहनवाँ भइल सोहाग॥

●

जिनगी = जिंदगी। फेंडवा = पेड़। मधु = वसंत। पुरनका = पुराना। छि = टहनी। बौराइल = बौर युक्त। बलकवा = बच्चे। बरन = वर्ण, जाति। बिहनवाँ = सबेरा।

जन्म—माघ सन् १९१७ ई०।

श्री गणपति पांडेय 'संकेत'

स्थान—जगतपुर, पकड़ी, शाहाबाद।

शिक्षा—हाई स्कूल।

साहित्य—भोजपुरी में 'बेलपत्तर' नामक आपका कवितासंग्रह प्रकाशित है। खड़ी बोली में भी कविता लिखने की रुचि है। भोजपुरी की 'गाँव घर' पत्रिका में संप्रति संपादनकार्य कर रहे हैं।

●

गीत

●

फले - फूले भेखर नीमियाँ नू हो,
झोंपे सोहरल डाढि ।
जोन्हिया उतरि आ सरगवा से हो,
नित बइठेली परात ॥
नरमी टिहुँगिया बेयरिया से हो,
छूअते लचिजात ।
जोबन भार पतरि धनि हो,
जइसे झुकि जाति ॥
बिरह - विषम ज्वर तापित रे,
बिरहिन एक आइ ।
ठाढि सितल जुड़ छहियाँ नू रे,
तन तपन मिटाय ॥
उमड़त लोर नयन लखि हो,
मन छकि रहि जात ।
टटका कमल कलि ऊपर हो,
जस परल कुहार ॥
लिलरा प चमकत टिकुली नू हो,
निचे ईंगुरा निसान ।
देखि ललकि कवि खोजत हो,
उपमा उपमान ॥
किया बाटे चान में जोन्हियाँ नू हो,
कि, वा जोन्हिये में चान ।
किया रवि - ससि संग वइठल हो,
पाके पूनम विहान ॥

छतिया लोटति लट केसिया के हो,
देखि अइसने बुझाय।
अमृत कलस जस ढूँढति हो,
नागिन लोटियाय॥
ओठवा छूअल चहे ओठवा से हो,
अँचरा झगराय।
झगरत देखि हँसति धनि हो,
दीपक बरि जात॥

भेखर निमियाँ = नीम का पेड़। सोहरलि = झुकी हुई। डादि = डाल। सरगवा = स्वर्ग, आकाश। परात = प्रातः काल तक। टिहुगियाँ = टहनियाँ। बेयरिया = वायु, हवा। पतरि धनि = पतली स्त्री। जइसे = जिस प्रकार। ठाढ़ि = खड़ी होकर। जुड़ = शीतलता पहुँचाने वाली। तपन = ताप, ज्वाला। लोर = आँसू। टटका = ताजा। जस = जैसे। कुहार = पाला, तुषार। लिलरा = ललाट। कि या = अथवा। चान = चंद्रमा। पाके = पाकर। केसिया = केश। अइसने = ऐसा ही। लोटियाय = लोटकर। चहे = चाहे, चाहता है। झगराय = झगड़ता है, अर्थात् बाधक बन जाता है।

बिरहा

●

होते भीनुसरवा के ललकी किरिनिया जइसे—
होखे दुपहरिया जवान ।
सँभली समइया पाके उहे रे किरिनिया तइसे—
वोही रंगे रूपे अवसान ॥
असही मानुख तोर उमरिया,
खन खन बीतत जाय रे ।
खने लड़िकपन खने जवानी,
खने बुढ़ापा आय रे ॥
एक दिन गोद भरे केहू के,
एक दिन बने सोहाग रे ।
एक दिन बोझा हो दुआर के,
चले गीरे भहराइ रे ॥
उहे रे ई देहिया एक दिन, चीतवा पलंगिया पर—
होखेला खेलवना मसान ।
दुख - सुख के दू पहिया लागल,
जीवन गाड़ी जाय रे ॥
जनम - मरन उँचा - खाला ई,
सुखरुख - पाँकी पाय रे ।
रंज - खुसी दू बरधा नाधल,
हचकत मचकत जाय रे ॥
आदर कभी निरादर चाभुक,
हरदम लागत जाय रे ।
राति - दिन लीकिया धइले, तिरिखा मोंहड़वा पर—
बइठल मन गड़िवान ॥
कभी मगन मन होके विहँसे,
कबहीं वइठि उदास रे ।
कबहीं मातल निंद झुकेला,
कबहीं जागल साँस रे ॥

कबहीं खा-पी मौज करेला,
कबहीं कटे उपास रे।
कबहीं बड़का-छोटका बन जा,
सोचे अमर विनास रे।
बरखा महिनवे जइसे, उमड़े बदरिया आके—
खने होखे टहटह घाम॥
खन गाड़ी खन बरधा निरखे,
खन रहता के ओर रे।
साँस रासि धइले जाला कि,
छूटे ना ई छोर रे।
असरा बनिया बोझा लदले,
बाँगड़ि धइले जोर रे।
पाछा आँखि बचाके आवत,
लागल कलवा चोर रे।
चढेला सुरतिया जब, धनि के मुरतिया तबे—
छेड़ेला बिरहवा के तान॥

भिनुसरवा = प्रातःकाल। सँझली = संध्याकालीन। उहे = वही। तइसे= तैसे = उसी प्रकार। वोही = उसी। अवसान = समाप्ति। असही = ऐसे ही, इसी प्रकार। मानुख = मनुष्य। खन = क्षण। खने = क्षण में। केहूके = किसी का। ई = यह। चितवा = चिता। खेलवना = खिलौना। मसान = श्मशान। खाला = नीची भूमि। पाँकी = पंक, कीचड़। बरधा = बैल। नाधल = जुते हुए। चाभुक = चाबुक, कोड़ा। लीकिया = लीक, लकीर। तिरिखा = तृषा, अभिलाषा। मोहड़वा = बैलगाड़ी का अगला भाग जहाँ गाड़ीवान बैठता है। उपास = उपवास, फाँका। टहटह = तेज। रहता = रास्ता। असरा = आशा। बांगड़ि = बागडोर। कलवा = काल।

जन्म—भाद्रपद कृष्ण १ सं० १९७६ वि०।

मंगलाप्रसाद पांडेय

स्थान—जफराबाद, रोहनियाँ, वाराणसी।

शिक्षा—विशारद, साहित्यरत्न।

साहित्य—विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में लेख व कविताएँ प्रकाशित हुआ करती हैं। अनेक कविताओं की रेकार्डिंग आकाशवाणी पर हो चुकी है। "किसान लहरी" नामक एक पुस्तक (पद्यरचना) निकट भविष्य में प्रकाश्य है।

●

कातिक कै भोर

चला देखि आई गाँवन में कातिक कै भोर ।

चढ़ले कतिकवा रे नखतै सेवतिया ।
निदिया किसनवा के दिनवै न रतिया ॥
दँउरी कुअरिये क खेते खरिहनवा ।
रेंड़वा पर चढ़लबा अगहनी कै धनवा ॥

भोरवै क सलवै क बाटे रे कमइया—
सनइया क धोववै कमरियै क तोर ।
चला देखि आई गाँवन में कातिक कै भोर ॥

खेतवै क मटिया बनल जैसे रूइया ।
बजड़ा जोन्हरियै में फुटि गइलै घुइया ॥
भोरवै सिवनियै में बाजैला बजनवा ।
बयला क घनटी किसनवै क तनवा ॥

जइसे मदिलिया में बिहनै क आरती रे—
वोइसैं सिवनिया में होतवा अनोर ।
चला देखि आई गाँवन में कातिक कै भोर ॥

उखिया बन्हलि जइसे भेंटलीं बहुरिया ।
टुप-टुप ओसिया चुवैला जैसे अँसिया ॥
आइ खिड़रिचियन बतावेली सगुनवा ।
एहिरे महीनवा में होइहन गवनवा ॥

मिलि लेहू मिली लेहू हमरी बहिनिया रे—
धरलबा उवदवा ससुरवैं की ओर।
चला देखि आई गाँवन में कातिक के भोर॥

आगे-आगे नाँ-नाँ-बाँ-बाँ कहे हरवहवा।
पिछवे घरिनियाँ बोवैली सुघर बेंगवा॥
धरती के खोइछे में डारिके बिसरिया।
हेंगवा के चदरा से तोपेर्लां सरीरिया॥

मइया धरतिया रे मोरे मेहनतिया क—
फल बाटै सब कुछ हथवा में तोर।
चला देखि आई गाँवन में कातिक कै भोर॥

नखत सेवतिया = सेवाती नक्षत्र। दँउरी = बैलों से रौंदवाकर फसल के डंठलों से दाने झाड़ने की क्रिया। कुअरिये = कुवारी, कुवार के महीने में कटनेवाली फसल। रेंडवा = फूटना। जोन्हरियै = ज्वार, एक प्रकार का अन्न। घुइया = वालें। तनवा = तान। मदिलिया = मंदिर। बिहने = प्रातःकाल की। अनोर = शोरगुल। बहुरिया = दुल्हन। अँसिया = आसू। खिडरिचियन = खंजन पक्षियों का झुंड। उवदवा = वादा, दिन (निश्चित हो गया है)। हरवहवा = हल चलानेवाला। घरिनिया = गृहणी। खोंइछे = आँचल में बनाया गया अन्न रखने का स्थान। बेंगवा = बीज। बिसरिया = बेंगा, बोनेवाला अन्न। हेंगवा = पटेला।

किसान तोर आसा

मटिया के नीचे बाटै तोरी किसमतिया रे—
मटिया के उपरा किसान तोरी आसा।
फटही कुरुतिया बा तनकै संघतिया रे—
टुटही मड़इया में तोहरै निवासा॥

जेठ-बइसखवा क तपल दुपहरिया—
छोड़ि पुरवटवा तै लेहले कुदरिया।
सरर-सरर वहत बाटे पछुवै लुअरिया—
पेट-ओठ सुखि गइले गोड़ले किअरिया।
जब रे दुनिया लेला खसकै बयरिया रे,
उखिया के खेतवा किसान तोरि बासा।

मटिया के नीचे बाटै तोरी किसमतिया रे—
मटिया के उपरा किसान तोरी आसा॥

आयल बसकलवा त चमकै विजुरिया—
घनघोर घेरि-घेरि आवैला वदरिया।
वोझवै बेहनिया क उघरी सरीरिया—
गोली अस लागत बाटै बूँदि बवछरिया।
जब रे दुनियवाँ क कटै चउमसवा रे,
दूर के सिवनिया में डँसै देह मासा।

मटिया के नीचे बाटै तोरी किसमतिया रे—
मटिया के उपरा किसान तोरी आसा॥

लागल सीतकलवा त भइलीं बोअइया—
हाँकि पुरवटवा तै कइले सिंचइया।
हाथे गोड़े फाटि गइलैं वजरै बेवइया—
मघवै के ठरिया में ऊखी क पेरइया।
जब रे दुनियवा के लागै मोटी गदिया रे—
तोहरे किसनवा पुअरवै वा पासा॥

मटिया के नीचे बाटै तोरी किसमतिया रे,
मटिया के उपरा किसान तोरी आसा॥

पेटवा के कारन देहलऽ खुनवा सुखाई—
गोड़े क पसीनबा त मुड़वै पै जाई।
जीये सनसरवा ले तोहरै कमाई।
तोरे अस नाहीं वा तियागी केहू भाई।
ऊहै दिन दूर नाहीं बाटै रे किसनवा—
तोहरै पतकवा जौ उड़िहैं अकासा॥

मटिया के नीचे बाटै तोरी किसमतिया रे,
मटिया के उपरा किसान तोरी आसा॥

●

किसमतिया = किस्मत, भाग्य। कुरुतिया = कुर्ता। संघतिया = संगी, साथ देनेवाला। पुरवटवा = पुर, मोट। लुअरिया = लू, गर्म हवा। किअरिया = (केदारिका) छोटा खेत। बसकलवा = वर्षाकाल। बेहनियाँ = धान का पौदा। बवछरिया = बौछार। मासा = मच्छर। चउमसवा = चौमास, वर्षाकाल। वजरे = कठिन, कष्टदायक। बेवइया = पैरों का फट जाना। ठरिया = घोर ठंढक। पतकवा = पताका, झंडा।

श्री भोलानाथ 'गहमरी'

जन्म—१७ दिसंबर १९२३ ई० ।

स्थान—गहमर, गाजीपुर ।

शिक्षा—इंटर ।

साहित्य—खड़ी बोली तथा भोजपुरी में आपकी कविताएँ प्रकाशित होती रहती हैं। संप्रति आप अमरावती नामक मासिक पत्रिका का संपादन कर रहे हैं। आपका कवितासंग्रह शीघ्र ही प्रकाशित होनेवाला है।

●

प्रतीक्षा गीत

भींजेला अँचरा त भींजे हो -
कहीं भींजे न कजरा।

फुलवा चुनिय सखि हार बनवलीं,
रचि - रचि मेंहदी से हाथ रचवलीं,

सूखे मेंहदिया त सूखे हो -
कहीं सूखे न गजरा।

ठाढ़ी दुअरिया केहू त समुझावे,
कौने कारन पिया आजो न आवे,

रूठेला याद त रूठे हो -
कहीं रूठे न जियरा।

केसे कहीं सखि मनवाँ क बतिया,
बैरिन भइलि बिसवासलि रतिया,

घेरे अन्हरिया त घेरे हो -
कहीं घेरे न बदरा।

भरलो पिरितिया क छलके गगरिया,
बीतेले रतिया क पिछली पहरिया,

टूटे तरइया त टूटे हो -
कहीं टूटे न असरा।

●

अँचरा = आंचल। कजरा = काजल। बनवलीं = बनाया। गजरा = फूलों की माला। दुअरिआ = द्वार पर। केहू त = कोई तो। आजो = आज भी। जियरा = जी। केसे = किससे। बैरिन = शत्रु। बिसवासलि = विश्वास वाली। भरलो = भरी पूरी। पिरितिया = प्रीति। पहरिया = प्रहर, पहर। तरइया = तारा। असरा = आशा, आस।

रूठे साँवरे

धरती - अकास आजु मीले गरवा डारि,
कतहीं मीले ना सँवरिया हमार बावरे।
थाके रहिया निहार, दूनो अँखिया उघार,
नाहीं आवे निरमोहिया हो मोरे रखवार,
उठे जियरा में पीर,
बरिसे नैनवाँ से नीर,
जइसे रीमि-झिमि बरिसे फुहार बावरे। कतहीं०

फूल बगिया बयरिया हो नाहीं मँहके,
आजु मनवाँ क पनछी हो नाहीं चहके,
जियरा लागे नाहीं मोर,
नेहिया पाये बिनु तोर,
जइसे बाजे बिनु तार ना सितार बावरे। कतहीं०

हँसि उठेला विपत्तिया क आन्हीं औ तुफान,
मन डगमग डोले आजु डोलेला परान,
केहू होत ना हमार,
मीले नाहीं खेवनहार,
नइया बहे जइसे बिनु पतवार बावरे। कतहीं०

अकास = आकाश। गरवा डारि = गले मिलकर। थाके = थक गई। रहिया = राह, मार्ग। निहार = देखकर। उघार = खोलकर। फूल बगिया = फूलों से भरा छोटा बाग। पनछी = पक्षी। तोर = तुम्हारी। जइसे = जैसे। आन्ही = आँधी। परान = प्राण। केहूँ = कोई। खेवनहार = खेकर पार लगाने वाला। नइया = नाव।

जन्म—अगहन पूर्णिमा सं० १६८२ वि०। **श्री धर्मराज शर्मा**

स्थान—रेवतीपुर, गाजीपुर।

साहित्य—उर्दू कहानियों से लेखनकार्य प्रारंभ। पश्चात् आचार्य परमानंद शर्मा के निर्देशानुसार हिंदी में लिखने का प्रोत्साहन। 'कथानिका' नाम से मौलिक कहानियों का संग्रह। उर्दू और बँगला की आधा दर्जन पुस्तकों के अनुवाद के अलावा बच्चों की पाठ्य-पुस्तकों का निर्माण एवं प्रसिद्ध जैन-ग्रंथ 'निर्ग्रंथ प्रवचन' की हिंदी-टीका का बँगला भाषा में अनुवाद। खड़ी बोली में गीत लिखने के साथ-साथ भोजपुरी गीतों में भी आपकी विशेष रुचि है।

●

बरखा-गीत

पियार क' अकसवा में धूँअना उठेला,
जैसे उठेले इयाद क बदरिया ना।

लागेली गुजरिया दरवजवा पर ठाढ़ि,
जैसे दढ़िया पर अँगुरी लगाय।
देहिया क नसे-नसे सँसिया खुलति,
जैसे गीतिया क पैंखुरी खुलाय॥

पछुवा पवनवाँ क सँगवा चलति उड़ि,
जैसे उड़लि पियार क नगरिया ना।

★

मीठे-मीठे छनवा क मोलवा करेला कवन,
मोर इंतिजरवा क खोजिया करेला कवन।
छन भर तनकी से खिरकी ले झाँकि लेई,
बहकल बदरवा क भूलति डहरिया ना॥

पियार क डहरिया क भूलति आजु तक,
खोजि-खोजि बीतली उमरिया ना।

★

जिनिगी दउरलि मुरदाघटवा कीनार तक,
मीलली ना भगिया क टेढ़की लकीरिया।
तलफत हियरा क बीतल न सफर कबों,
कहीं मीललें ना मनवाँ सनेहिया ना॥

★

नदी - नार घर - वन दीसवा सरापे सब,
बरखा नीरमोहिया बीदेसिया कहावे अब।
सब मिलि - जुलि पूछें ई बताव तू बीदेसी!
काहें भरली न आजु तक रूप क गगरिया ना॥

●

पियार = प्यार, प्रेम। अकसवा = आकाश। उठेला = उठता है। इयाद = याद, स्मृति। लागेली = होने लगती है। दढ़िया = ठुड्डी। लगाय = लगाकर। सँसिया = श्वास, साँस। पँखुरी = पंखुड़ी। खुलाय = खुलती है, खिलती है। सँगवा = संग में। छनवाँ = क्षण। मोलवा = मोल। कवन = कौन। इंतिजरवा = इंतजार, प्रतीक्षा। तनकी = तनिक। डहरिया = डगर, मार्ग। बीतली = बीत गई। दउरलि = दौड़ पड़ी है। भगिया = भाग्य। टेढ़की=टेढ़ी, प्रतिकूल। तलफत = बेचैन। सनेहिया = स्नेही, प्रियतम। नार = नाला। दीसवा = दिशा। सरापे = शाप देते हैं। भरली = भरी।

बिरह-गीति

मोरा अँखिया से झर - झर अँसुआ झरेला,
जब से मीले ना नगरिया तोहार।
असवा क पँखिया ले उड़लीं अकसवा में,
रहि - रहि आवे सुधिया तोहार॥

पनियाँ क बूँद बनि बिखरि गइलिं हम,
जरती भूँभूरिया के पास।
सँपवा छुलत बाटे, चपवा चलत बाटे,
जोहि - जोहि बटिया तोहार॥

पउवाँ छुए के कबसे सधिया लागलि बाटे,
भूले ना मूरतिया तोहार।
हउवा क झोंकवा से जब - जब सुनतानीं,
भूले नाहीं बतिया तोहार॥

मनवाँ क बनवाँ में अगिया लागलि बाटे,
फूलवा लागेला जैसे सूल।
दहकत हियरा जे तलफि - तलफि ऊठे,
मीले ना डहरिया तोहार॥

●

झरेला = झरता है, गिरता है। तोहार = आपकी। असवा = आस, आशा। पँखिया = पंख। सुधिया = सुधि, याद। भूँभूरिया = गर्म रेत, तप्त धूल। सँपवा = साँप। चपवा = चाप। जोहि-जोहि = देख-देखकर। पउवाँ = पाँव। सधिया = साध। मूरतिया = मूर्ति, सूरत। हउवा = हवा। सूल = शूल, काँटा। तलफि उठे = तड़प उठता है। डहरिया = डगर, मार्ग।

जन्म—२५ जुलाई सन् १६२७ ई०।

श्री विवेकी राय

स्थान—सोनवानी, कारों, गाज़ीपुर।

शिक्षा—एम० ए० (हिंदी)।

साहित्य—आपकी निम्नांकित पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं—

(१) अर्गला (काव्य)।

(२) जीवनपरिधि (कहानी)।

(३) किसानों का देश (निबंध)।

(४) गाँवों की दुनिया (निबंध)।

(५) त्रिधारा (निबंध)।

अप्रकाशित पुस्तकें—

(१) निशांत (काव्य)।

(२) प्यास („)।

(३) अध्ययन की अमराई (निबंध)।

विशेष कार्य—१६५८ से ही 'मनबोध मास्टर की डायरी' शीर्षक स्थायी स्तंभ 'आज' वाराणसी के आप लोकप्रिय लेखक हैं।

शरद

●

भूमि उठल मद भीनल बजरा, खंजन नयन निहार रे !
आइल शरद बहार रे, आइल शरद बहार।
पहरा बीति गइल पावस के, लोग भइल खुशहाल,
ताल - ताल पर कलरव उतरल, धरती भइलि निहाल।
झलकलि पूरब ओर भोर की गोरिया दमकल भाल,
चमकलि पाँव पखारलि मोती, गमकल मलल गुलाल !
हंसा चलल बिदेसे, अइली ढेंकी बान्हि कतार रे।
आइल शरद बहार ॥

झिर-झिर बहल जोमाइल नारा, लवटल नदी बिसास,
सिहरल सून अरार, निछाने फूलल गह - गह कास।
गुलगुल पलिहर पर तरनाइलि आइलि फफनलि घास,
हँसि-हँसि हँसुआ चले गुजरिया बतरस भरल लहास।
भूमि उठल मद भीनल बजरा, खंजन नयन निहार रे।
आइल शरद बहार ॥

चमचम किरिनि सरग से उतरलि, उज्जर दिन पुरवार,
निरमल रइनि अंजोरिया उमड़लि बिटिया बनल कुँआर।
उझिलल अमृत बुझाइल सगरे, फूलि उठल भिनुसार,
मातलि बकुल कियारी, झरि झरि परलन हरसिंगार।
बाग बगइचन में जुड़ छाँही, शीतल चललि बयार रे।
आइल शरद बहार।

फूलल कवँल उड़ल रस रसिया भौंरा भरल गुमान,
झिलमिल कुहरा चलल दनाउर भइले मधुर बिहान।
खूललि दसो दुआरि, खेत में हँसल अगहनी धान,
बावग चिन्ह लमेरा जामल हँसि-हँसि चलल किसान।
अगरा गइल पपिहरा स्वाती, धनिया करू सिंगार रे।
आइल शरद बहार।

घहरा गइल दसहरा, मेला चिखा गइल पकवान,
चारू भइया चारि चान जस लीला के मैदान;
हँसी खुसी में छुउकल लइका, लउकल धनुही बान,
टटके दिया दियारी दुरदिन दू दिन के मेहमान!
कातिक लगल नहान, सिवाने आइल खूब सुतार रे।
आइल शरद बहार।

●

पावस = वर्षाकाल। जोमाइल = जोम से भरा हुआ। नारा = नाला। लवटल = लौट आया। बिसास = विश्वास। अरार = खड़ा किनारा। निछाने = केवल। कास = घास विशेष। गुलगुल = मुलायम। पलिहर = बरसात में बिना बोए जोतकर छोड़ा हुआ खेत। तरनाइल = तनी हुई। फफनलि = फुनगियों से युक्त। बतरस = रसमय बात से। लहास = उल्लास। भीनल = भींगा हुआ। बजरा = बाजरा। सरग = स्वर्ग। उज्जर = उज्ज्वल। पुरवार = पूर्व का। रइनि = रैन, रात। उझिलल = ढुलक पड़ा। बुझाइल = बुझ गया। भिनुसार = भोर का समय। बकुल = अगस्त का फूल। जुड़ छाँही = शीतल छाया। कवँल = कमल। दनाउर = गरम। दशो दुआरि = दश दिशाएँ। बावग = बोया हुआ। लमेरा = बिना बोए उगनेवाले पौदे। अगरा गइल = प्रसन्न हो गया। चिखा गइल = चखा गया। चान = चाँद। लउकल = दीख पड़ा। टटके = नूतन। दियादियारी = दीपावली। सुतार = उपयुक्त अवसर।

गीत

●

माकति चलति किरिनि अगिआइलि बान्हि हवा के पाँखि।
साल माथ घहराइल आइल खेती मुँह वइसाख,
कोड़ि-कमा खायेवाला के दगलि सलामी लाख।
सुनहट गाँव, उकाँव उठवले मनसायन खरिहान,
जहाँ पसेना के गाना बा, अनधन वा भगवान्।

चाकलि रासि, सुहानी काशी, मंदिल पासे पास,
झलकल धँसल धूप में जइसे सिव वाला कैलास।
सिर पर पनिहा डोलल भूसा उड़ि-उड़ि करत कलोल,
लछिमी चरन परल धरती पर, आँचर उड़ल अमोल।

उमड़लि गंगाधार कि सिर पर संकर जी महराज,
भारी बनि सँगवाई छुटलन, भूसा रूसल आज।
बा किसान झंडा अनाज के ठाढ़ हाथ में थेघ,
डहत मजूर दया आइलि भा ओनवल उज्जर मेघ।

कादो इसे वसंत, अंग में बरलि टँटइनी दाह,
बउराइल मनवा अलसाइल खोजे गुदगर छाँह।
ऊगल माहुर घाम, पछिवहीं लूचि अगिनि के बान,
दुपहरिया पाँतर में नाचलि बाँचल अबहीं प्रान।

पानी भइल परान, पनिसरा बइसल धरम दुआर।
जिया जंतु छिछिआइल डहके वन-बन जीभि पसारि।
माकति चलति किरिनि अगिआइल वान्हि हवा के पाँखि,
खेह उड़लि बड़ि देह बुडलि, भरि धूरि भटाइलि आँखि।

टपकि-टपकि महुआ पतराइल, कोंचा चढ़ल अकास,
निबिआ सोन्ह सोन्हाइलि फूललि भूललि खाइ बतास।
छोट टिकोरा मन ललचाइल वाउर भइया स्वाद!
छिपि छिपि के कोइलिया बोललि आइलि केकर याद?

भोर भइल भेंगरजवा बोलल, डोललि मलय बयारि,
मरलसि गमक परोरि जुड़ाँसी जादू, लिहलसि भोरि।
अलगल झाँप अन्हार, दूर से धाहल साफ सवेर,
उभरल अइसन चित्र नयन का आगा सरग अनेर—

पलुहलि गाँछी, छिछिल तलैया, काटल गोनई खेत,
बाट-बाट में ठाढ़ अकउआ, माला-फूल समेत।
माथ छितनिया, नवही चललीं बनसपती के सदेहि,
रस में पगुरी करत डहरले गोरू डाकि सरेहि।

बंसवारी वारी में चहचह, गूँजि गँजाइल गान,
धरती चूमि फुलाइल कतहीं नन्हकी घासि अजान।
मन के चउआ, कइल हिराउर धनिया के लखराँव,
बर छहियाँ अकवारी भरि भरि जीअल गाँव गिराँव।

कठिन तबाही में पवले बा टूसा रस के धारि,
ई धरती के छोह कि पाकड़ि आज भइल छतनारि।
ई धरती के छोह कि दुनिया हरियर पीके आगि।
एगो धरती का बेटा के जरलि जेठ ले भागि।

●

साल माथ = वर्ष का अंतिम भाग। घहराइल = आ पहुँचा। सुनहट = सुनसान। उकाँव = अनाज और भूसे की राशि। मनसायन = लोगों से भरा-पूरा। खरिहान = खलिहान। चाकलि = लंबी चौड़ी। पनिहा = पानी के समान चमकनेवाला। सँगवाई = साथ रहनेवाले। रूसल = रूठ गया। धेघ = पकड़ कर। डहत = ताप से दग्ध। मजूर = मजदूर। ओनवल = नीचे की ओर झुका। उज्जर = उज्ज्वल, सफेद। टँटइनी = तेज। दाह = ताप। गुदगर = घनी। ऊगल = उदित हुआ। पछिवहीं लूचि = पश्चिम दिशा की तप्त हवा। पाँतर = मैदान। पनिसरा = पौसरा। जिया = जीव। छिछिआइल = व्यग्र होकर। डहके = बिलखते हैं। माकति = उन्मत्त होकर। अगिआइल = आग के समान जलानेवाली। खेह = धूल, गर्द। भठाइल = भर गयीं। पतराइल = पतला पड़ गया, कम हो गया। कोंचा = महुवे की पंखुड़ी। निबिया = नीम। सोन्ह = सोंधी। सोन्हाइल = सोंधेपन से भर गई। बतास = हवा। टिकोरा = आम का छोटा और कच्चा फल। बाउर = बुरा। केकर = किसकी। भेंगरजवा = भृंगराज, भौंरा। परोरि = अभिमंत्रित करके। भोरि = भुला लिया। अलगल = अलग हो गया, दूर हो गया। झाँप = घना। धाहल = प्रकट होने लगा। अनेर = व्यर्थ। पलुहलि = पल्लवित हुई। गाछी = पेड़। गोजई = गेहूँ और जौ का मिश्रित रूप। अकउआ = अकाव, आक, मदार। छितनिया = छोटी टोकरी। नवही = नवयुवती। पगुरी = पागुर। डहरले = चल पड़े। गोरू = गाय बैल। सरेहि = हरियाली से भरा मैदान। कतहीं = कहीं पर। चउआ = चौपाया, जानवर। हिराउर = (चौपायों का) जमाव। लखराँव = खेती बारी का स्थान। गिराँव = गाँव, बस्ती। टूसा = (पाकड़ का) फूल। छतनारि = चारों ओर फैली हुई।

जन्म—८ मई, १६२८ ई० ।

रमेशचंद्र झा

स्थान—फुलवरिया, सुगौली, चंपारन (बिहार) ।

शिक्षा—प्रवेशिका के बाद जेलयात्रा और स्वतंत्र अध्ययन ।

साहित्य—काव्य—मुरलिका, प्रियंवदा, आग-फूल, मेघ-गीत, आसावरी, स्वागतिका ।

उपन्यास—चीखती दीवारें, जीवन-दान, मिट्टी बोल उठी, मजार का दिया, वत्सराज, आजादी की राह में, काँटे और कलियाँ, दुर्ग का घेरा ।

विविध—चंपारन की साहित्य साधना और एक दर्जन से अधिक बाल साहित्य—अँजोर (त्रैमासिक, पटना) में अगस्त से एक भोजपुरी उपन्यास—'सुरमा सगुन बिचारे ना' का क्रमशः प्रकाशन ।

●

देस-गीत

हिंदुस्तान जनमधरती हम वासी हिंदुस्तान के।
आसमान पर लहरत बा झंडा हमरा बलिदान के॥

हमरा माथे मुकुट हिमालय
थाती घर - संसार के
हरदम हहरत हिया जुड़ावे
सागर पाँव पखार के
देस - देस के लोग निरेखे
आपन आँख पसार के

आज देस की हर पुकार पर बाजी हमरा जान के।
आसमान पर लहरत बा झंडा हमरा बलिदान के॥

जहाँ नेह के नदी बहत बा
गली - गली हर गाँव में
प्रीत - रीत के बंसी बाजे
कहीं कदम का छाँव में
आँगन में गोरैया नाचे
बिछुआ बान्हे पाँव में।

जहाँ किरिनियाँ उठ के पहिले खोले आँख बिहान के।
आसमान पर लहरत बा झंडा हमारा बलिदान के॥

खेतन में सीता उपजेली
जहाँ जनक का देस में
लोग जहाँ सोना जइसन
गौतम गाँधी का भेस में,
आपन कीमत बा हमनी के
चरखा देस - बिदेस में

आपन सब कुछ खो के हम बारब दियरा निरमान के।
आसमान पर लहरत बा झंडा हमरा बलिदान के॥

हिया = हृदय। निरेखे = देखते हैं। नेह = स्नेह, प्रेम। बिछुआ = पैर का एक गहना। जइसन = जैसे। बारब = जलाएँगे। दियरा = दीपक। निरमान = निर्माण।

गीत

पुरवैया लहरा के भागल बरसे लागल बदरा,
बरसे लागल बदरा!

गुमसुम भइल बयार घेर के वन्हलस चारू कोना
दिगमिग भइल कछार खेत में बरसे लागल सोना
चहके लागल रेत पिआसल ओढ़े चलल चुनरिया
गमके लागल गाँव छमाछम नाचे नगर नगरिया
झुरमुट में छुप के सँझलौके नाचे साम - सँवरिया
थिरके लागल मोर, गुजरिया गावे लागल कजरा
पुरवैया लहरा के भागल बरसे लागल बदरा!
बरसे लागल बदरा!

धनखेती में झुकल किसानन .के हियरा हरिआइल
आँख उठा के कहलस कइसन कठजमुनी करियाइल
रिमझिम रसबुँदिया में भीजल आँखर परल परतिया
आसमान पर जाके नाचे लागल जरल धरतिया
मोती बनके पानी बरसे पूजब नाग दुलरुआ
अँगना के तुलसी-चौरा पर वारब चौमुख दियरा
पुरवैया लहरा के भागल बरसे लागल बदरा!
बरसे लागल बदरा!

बिरहिनियाँ अकुला के निकलल चलल लिखावे पतिया
दिन बीतल जाता अलसा के भार भइल बा रतिया,
का जाने कइसे बिलमवलस मरलस कवन नजरिया
परदेसी के कवन भरोसा कवनों बात भितरिया!
चाहे कवनो कइलस जादू मरलस कवनो टोना
लिखिह अँचरा सूखत नइखे, मानत नइखे जिअरा
पुरवैया लहरा के भागल बरसे लागल बदरा!
बरसे लागल बदरा!

●

बन्हलस = बाँध दिया। दिगमिग = हरियाली। सँझलौके = संध्यासमय। हरिआइल = हरा हो गया। कइसन = कैसी। करिआइल = काली हो गई। परतिया = परती जमीन। बिलमवलस = रोक दिया। कइलस = किया!

जन्म—८-१-१९२८ ई०।

श्री सरयूसिंह 'सुंदर'

स्थान—साफियाबाद, सारन (छपरा)।

शिक्षा—बी० ए० (आनर्स) बिहार विश्वविद्यालय।

साहित्य—प्रकाशित पुस्तकें—

(१) वीणा। (२) चिता। (३) चाँदनी। (४) प्रकाश।
(१) प्रेयसी। (२) बादल।

अप्रकाशित—

१ दर्जन उपन्यास। कवितासंग्रह तथा कहानीसंग्रह। बद-रिया (भोजपुरी गीत)।

फगुनी अँजोरिया

चमचम चमकेला फगुनी अँजोरिया हो चमकेला अँगना दुआर।
गम गम गमकेला आम के मोजरिया हो गमकेला घर पिछुआर॥

रतिया सुहानी आइल,
चारों ओर जवानी छाइल,
सुधिया के पँखिया चढ़के,
बतिया पुरानी आइल,

अइसन अँजोरिया तो देखि देखि गोरिया हो रोवत होइहें मनवा तहार।

अँखिया में नीर होई,
जियरा में पीर होई,
केहू याद आवत होई
हियरा अधीर होई,

नयन कटोरवा के झरझर लोरवा के पोंछत होइबू अँचरा पसार।

तन अकुलात होई,
मन दुखलात होई,
एतना बहार बाकिर
कछु ना सुहात होई,

अइसन अँजोरिया त अगिया लगावत होई जरत होई एड़ी से कपार।

छाइल बहार होई
आइल लहार होई
रसे रसे धीरे धीरे—
डोलत बयार होई,

बोलत होई बगिया में कुहुकि कोइलिया हो काटत होई सोरहो सिंगार।

अब तू पराई भइलू
हमके भुलाई गइलू,
दूसरा नगरिया धनिया—
नेहिया लगाई गइलू,
अब ए जिनिगिया में तहरो सुरतिया हो लिखल नइखे हमरा लिलार।
चमचम चमकेला फगुनी अँजोरिया हो चमकेला अँगना दुआर ॥

●

अँजोरिया = उजेली रात, चाँदनी। गमकेला = महकती है। मोजरिया = मंजरी। पिछुआर = पिछवाड़ा, घर के पीछे का हिस्सा। सुधिया = सुधि, याद। पँखिया = पंख। अइसन = ऐसी। तहार = तुम्हारा। नीर = पानी, आँसू। केहू = कोई। लोरवा = लोर, आँसू। दुखलात = दुखी। बाकिर = बाकी, किंतु। लहार = लहर, तरंग, उमंग। रसे-रसे = मंद गति से। पराई = दूसरे की।

महुआ-गीत

बगिया में बोले कोइलिया हो भइलें भिनसार।
बीनेली महुआ चँगेलिया हो सखिया सुकुमार॥
दूर असमनवा में सुकवा उगल बा
गते गते होता अँजोर,
बड़की बगइचा में बोले पपिहरा
बनवा में बोलेला मोर,
रसे 'रसे डोले गछुलिया हो पुरवा के बयार।

गछिया से टप टप महुआ चुएला
जैसे नयनवा से लोर,
महुआ के गछिया मातल मलिनिया
मनवा में उठेला हिलोर,
भुइयाँ महुअवा छिटाइल हो जैसे मोती हजार।

गोरी के मुखड़ा चमके चमाचम
जैसे चनरमा गोर
भुइयाँ के चाँद देखि चंदा गगन के
भगलें किरिनियाँ बटोर,
जोतवा से चमकल धरतिया हो मुरझाइल अन्हार।

गोरी के लिलरा चमके टिकुलिया
जैसे बिजुरिया सजोर,
नयनों में कजरा उड़ेला अँचरा
मारे झुलनिया झकोर,
सजनी के अइसन बचनिया हो जैसे रिमझिम फुहार।

मनवा हमार बसे एही सुनसनवा
अमवा महुअवा के छाँव,
बगिया-बगइचा में बाटे सरगवा
झोपड़ी-झोपड़िया के गाँव,
मनवा में बाटे पीरीतिया हो बनवा में बहार।
बगिया में बोले कोइलिया हो भइलें भिनसार॥

●

भिनसार = भोर। चंगेलिया = छोटी टोकरी। सुकवा = शुक्रतारा। गते-गते = धीरे-धीरे। होता = हो रहा है। अंजोर = प्रकाश। गछुलियाँ = छोटा पेड़, गाछ। गछिया = पेड़। लोर = आँसू। हिलोर = तरंग, उमंग। भुइयाँ = भूमि, जमीन पर। छिटाइल = बिखर गया। चनरमा = चंद्रमा। भगलें = भाग गया। किरनियाँ = किरण। जोतवा = ज्योति, प्रकाश। बिजुरिया = बिजली। सजोर = जोर से, तेज। अइसन = ऐसी। बचनिया = बोली। एही = इसी। छाँव = छाया। बाटे = है। सरगवा = स्वर्ग।

जन्म—३० अगस्त, १६२८ ई० ।

श्री शिवप्रसाद 'किरण'

स्थान—वेतिया, चंपारन (बिहार) ।

शिक्षा—ग्यारहवाँ दर्जा—१६४२ के आंदोलन में जेलयात्रा के कारण पढ़ाई स्थगित ।

साहित्य—१६५२ तक—आप उर्दू में लिखते रहे । अब भोजपुरी में रचना करने की ओर आप की विशेष रुचि है ।

७ पुस्तकें अप्रकाशित रूप में पड़ी हुई हैं ।

गजल

●

नजरिया न मारी पिरीतिया लगालीं।
नयन के सपन में सुरतिया बसालीं॥
डगरिया - डगरिया नजरिया के पहरा
सपनवें में आके उमिरिया :मिला लीं।
बिरह के जिनगिया में अँसुवा भरल वा
पिरीतिया के रंग चुनरिया रंगालीं।
सँवरकी सुरतिया न तनिको सुहाता
चनरमा के जगमग टिकुरिया लगालीं।
मिलन के डगरिया अगिया विछल वाय
बेअरिया से कहिके बदरिया बुलालीं।
बदरिया से देखीं किरन मुस्कुराइल
नजरिया से झिलमिल नजरिया हटालीं।

★

पिरीतिया = प्रीति, प्रेम। उमिरिया = उम्र। सँवरकी = साँवली। तनिकों = तनिक भी। चनरमा = चंद्रमा। टिकुरिया = टिकुली। विछल वाय = बिछी हुई है। बेअरिया = वायु।

गजल

●

सेजरिया पे रतिया नजरिया भुलाइल।
पिरितिया में आठो पहरिया भुलाइल॥
अगनवाँ में विहरेला मन के पपीहरा,
सपनवे में देखनीं सँवरिया भुलाइल।
अँजोरिया के अचरा से लिपटल चनरमा,
उमिरिया से मिलके उमिरिया भुलाइल।
पुरुविया से आइल सँवरकी बदरिया
अँधेरिया के धुन में डगरिया भुलाइल।
न रतिया सुहाला न चमचम किरीनिया
पिरितिया से मातल उमिरिया भुलाइल।
किरन हम न जाइब सजन के नगरिया,
डगरिया में मन के गठरिया भुलाइल।

रुबाई

●

का कहीं नेह के बजरिया में
तन के सुधिया भुला गइल बाटे।
हम त देखनीं उड़त नजरिया से
मन के चिड़िया लुभा गइल बाटे।

★

सेजरिया = शय्या। पहरिया = प्रहर, पहर। सँवरिया = श्याम अर्थात् प्रिय। अँजोरिया = उजेली रात। पुरुविया = पूर्व दिशा से। सँवरकी = काली। बदरिया = बदली। अँधेरिया = अंधकार। जाइब = जाँऊगी। गठरिया = गठरी, पूँजी।

जन्म—२४ सितंबर, १९३० ई०

श्री पांडेय कपिल, एम० ए०

स्थान—कविकिंकर-कुटीर, शीतलपुर, पो० बरेजा, सारन (बिहार)।

शिक्षा—काशी हिंदू विश्वविद्यालय से सन् १९४८ में आई० ए० और १९५० में बी० ए०; बिहार विश्वविद्यालय से सन् १९५७ में हिंदी में एम० ए०।

साहित्य—भोजपुरी और हिंदी में गीत, कविता, निबंध, कहानी इत्यादि का निरंतर प्रणयन। मुख्यतः गीतकार और कवि। हिंदी गीतों का एक संग्रह "आभास" सन् १९५६ में प्रकाशित। भोजपुरी गीतों तथा हिंदी कविताओं के अलग-अलग संग्रह शीघ्र प्रकाशित होने वाले हैं। भोजपुरी में ऋग्वेद के अनेक सूक्तों का तथा शेली इत्यादि अंग्रेजी कवियों की कविताओं का पद्यानुवाद किया है। थॉन जेम्स हॉल्स की अलभ्य पुस्तक 'टू मंथ्स इन आरा इन एट्टीन फिफ्टी सेवन' का भोजपुरी और हिंदी अनुवाद किया है—भोजपुरी अनुवाद का पूर्वांश धारावाहिक रूप से 'भोजपुरी' पत्रिका में प्रकाशित हो चुका है और हिंदी अनुवाद 'उत्तर बिहार' में।

●

गीत

खुलि गइले पुरब के रतन केवड़िया
बिहँसि-बिहँस झाके भोर।
भोरवा के गोर-गोर रुपवा निरेखि देखि
रतिया लजाई के आकास में लुकइली
आलस के जाल दुनिया से मेटि गइले
त चह-चह चिरईन अलख जगवली
मोहवा के मेटि गइले करिया-अन्हरिया
फइलल सगरी अँजोर।
चमचम चमकेले देव हो सुरुज देव
नाँचि-नाँचि उनके रिझावेली किरिनियाँ
खिलल खिलल फूल अँचरा में लोढ़ि-लोढ़ि
उनके बलैया लेली धरती मलिनियाँ
लहर-लहर बहे खुशी के लहरिया
घसवा पर चमकत लोर।
रात भर दुखवा कलेसवा के सहि-सहि
फूल सभ आपन पटर खोलि दीहले
बड़ा रे तपेसवा से जइसेरे गेयानी सभ
अपना गेयान के पटर खोलि लीहले
पवली धरतिया रे चेत के जिनिगिया।
भइली आनंद में विभोर।

●

रतन = रत्न। केवड़िया = किवाड़। भोरवा = भोर। लुकइली = छिप गई। जाल = समूह। त = तब। चिरईन = चिड़ियाँ। अलरव जगवली = पुकार कर परमात्मा का स्मरण करने लगी। फइलल = फैल गया। सगरो = सर्वत्र। अँजोर = प्रकाश। रिझावेली = प्रसन्न करती हैं। मलिनियाँ = मालिन। घसवा = घास। लोर = आँसू अर्थात् ओस के कण। कलेसवा = क्लेश। सभ = सब। पटर = पंखुड़ी। तपेसवा = तपस्या, तप। अइसे = जैसे, जिस प्रकार। गेयानी = ज्ञानी। गेयान = ज्ञान। पटर = पट। पवली = प्राप्त किया, पाया।

गीत

काहे फूँकेलऽ बँसुरिया हम त आवते रहनीं हँ।

तोहरा बँसुरी के बोल पर भुलाई जाला मान
तोहरा लपके लहरिया पर लोटाई जाला प्रान
बाकिर काहे खातिर अइसन विरहा के तान

हम त रूसल रगिनिया के मनावते रहनीं हँ।

तोहरा ओठ के बँसुरिया जब बाजे लागेले
तोहरा सूतल सुरतिया तब जागे लागेले
मन में विरहा के अगिया तब लागे लागेले

हम त सूतल नगिनिया के जगावते रहनीं हँ।

हमरा पूरा रे इयाद बाटे ओह दिन के बात
ऊ जे जमुना किनरवा, ऊ अँजोरिया के रात
बाकिर काहे खातिर अइसन मरम के घात

हम त मनवाँ में चनवाँ तनावते रहनीं हँ।

●

काहे = क्यों। फूँकेलऽ = बजाते हो, फूँक मारते हो। भुलाई जाला = भूल जाता है। लहरिया = स्वर का तरंग। लोटाई जाला = लोट पोट हो जाता है। बाकिर = किंतु। रूसल = रूठी हुई। रगिनिया = रागिनी। रहनीं हँ = रहती थी। इयाद = याद। ओह = उस। ऊ जे = वह जो। किनरवा = किनारे। मरम = मर्म। चनवाँ = चँदोवा।

जन्म - संवत् १६८७ ।

श्री आनंदभैरव शाही

स्थान—भदैनी, वाराणसी ।

शिक्षा—प्रारंभिक शिक्षा के अनंतर सेंट्रल हिंदू कालेज काशी से दशम कक्षा उत्तीर्ण की और दर्शन एवं मनोविज्ञान में एम० ए० किया ।

साहित्य—'लहरियाँ' नामक छोटा कवितासंग्रह स्व० आचार्य केशवप्रसाद मिश्र की भूमिका के साथ प्रकाशित। पत्रकारिता का अनुभव और अनेक साहित्यिक सांस्कृतिक संस्थाओं का सक्रिय सहयोग के साथ संचालन। मूलतः भोजपुरी से भिन्न क्षेत्रीय होते हुए भी काशी एवं 'काशिका' से जन्मजात अनुराग। खड़ी बोली की कविता तथा आलोचना के क्षेत्र में आप की विशेष रुचि है ।

●

इयाद

(कुंडलिया)

●

मस्ती रहल न चैन - सुख
गयल न तवौ इयाद
मन लउले चकरात जिउ
कहले रहल न जात
कहले रहल न जात, रहत
अउनत ऊ बतिया
हियरा में हो फँसल रहत
घालत दिन - रतियाँ
देहियाँ पिसल, नून - तेल,
घर - बार गिरस्ती
ठप्पा मन पर पड़ल
हेराय चलल सब मस्ती।

●

गयल न = गई नहीं। तवौ = तब भी। इयाद = याद। लउले = लाने पर। जिउ = जीव, जी। कहले = कहे बिना। अउनत = उद्विग्न किये रहती है। ऊ = वह। हियरा = हृदय। घालत = चोट पहुँचाती रहती है। देहियाँ = देह, शरीर। नून = नमक। गिरस्ती = गृहस्थी। ठप्पा = छाप, धक्का, ठेस। हेराय चलल = भूल गई।

सँघतिया

(सानेट)

●

हमरे हियाँ दिअउरी के दिन अइलऽ नाहीं
एह से का? ई दिया हमार जरत राहै दऽ,
जोहत रस्ता रही रात भर; मन चाहै तऽ
एक्के फूँकि बुतावऽ आके; अचरज नाहीं—
कइ देबऽ आके जरूर तू ईहौ बतिया।
काहे से कि जवन परेम आतमा कऽ हौ
हमरे तोहरे बीच कबै मुरझाय चुकल हौ,
दिहलऽ छोड़ कि जबसे आँख बचाय सँघतिया।
सच्चौ कहऽ इयाद कबौ हम आइत नाहीं
तोहरे मन में? अइसन का हौ भयल करेजा?
अगर जरूरत होय, जरत हाँथे पर लेजा—
ई पियार कऽ दिया, बुताय बरत फिन नाहीं।
कसम तोहैं, जियरा कऽ नेहिया मत झुराय दऽ
आई काम कबौं, एह से चित में बसाय लऽ॥

●

सँघतियाँ = संगत, साथ। हियाँ = यहाँ। दिअउरी = दीपावली। एहसे का = इससे क्या। ई = यह। आके = आकर। ईहौ = यह भी। काहें से = क्योंकि। जवन = जौन। इयाद = याद। अइसन = ऐसा। जरत = जलते हुए। पियार = प्यार। फिन = पुनः, फिर। नेहिया = स्नेह।

छिपावल

(कविता)

●

जबसे हमार बात
मन में धँसल तोरे
मुँहवाँ देखउलऽ न
पलकौ घरै बदे।

जानीला मगर बात
एकौ नाहीं मन में कऽ
रक्खऽ लऽ छिपउले तू
जाने केकरे बदे।

रखलऽ परछाहीं
बनाय जौन हम्मैं सदा
मुँह का फिरउलऽ ई
अकेलै जरै बदे!

झाँवर भयल काहे
चेहरा तोहार भला
बात कौन हौ जे नाहीं
हमरे सुनै बदे!

★

बदे = लिये। जानीला = जानता हूँ। केकरे = किसके। फिरउलऽ = फेर लिया। जरै = जलने। झाँवर = झाँवे के रंग का, मलीन।

जन्म—१८ जुलाई सन् १९३० ई०। **श्री देवेंद्रकुमार बंगाली**

स्थान—कुशीनगर, देवरिया।

शिक्षा—एम० ए० हिंदी। इसके अतिरिक्त एल० एल० बी० (द्वितीय वर्ष के छात्र)।

साहित्य—खड़ी बोली में नई कविता तथा भोजपुरी में नवीन उपलब्धियों के माध्यम से रचना करने की ओर आपका विशेष झुकाव है। आपकी रचनाएँ प्रमुख पत्रिकाओं में प्रकाशित होती रहती हैं।

गीत

●

ना चली तोर न मोर रे—
पिया होखे दे भोर
अबहीं अन्हरवे अँजोर
किरिनियाँ सूझे नाहीं
अँगिया उठे थोर थोर
दरदियो बूझे नाहीं
परल सुरतिया के जोर
कि अयना फूटे लागल,
उगल दुइजिया के चान
कि अँगना टूटे लागल
भइलीं सुआ के ठोर
रे, पिया होखे दे भोर।
कस देला मन के आस
भरम बस जाला नाहीं
कतनों बहेले बयार
अँचरा में डूबल पीठि
परोसिन राउर लागे
दाँते के काटल होठ
पियासन माहुर लागे।
ना हम, साहु न तू चोर
रे पिया होखे दे भोर।
सहजन फूले न पाके
सदा बन - पाखी लागे।
जाने ना ठाँव कुठाँव
कि अँखिये आँखी लागे

अँजुरी के रोपल धान
त कोंपल फूटे नाहीं
जूड़ा के जोरल गाँठि
हाथ से छूटे नाहीं
का कइ लीहें चकोर
रे पिया होखे दे भोर!

सूझे नाहीं = दिखाई नहीं पड़ती हैं। अँगिया = चोली (यहाँ चोली के भीतर स्तनों के उभार से अभिप्राय है)। थोर = थोड़ी। दरदियो = दर्द को, पीड़ा को। अयना = आईना, दर्पण। दुइजिया = द्वितीया। चान = चंद्रमा। सुआ = सुग्गा। भरम = भ्रम। बयार = वायु, हवा। उधियाला नाहीं = हवा में बह नहीं जाता। माहुर = विष। वनपाखी = वनपक्षी। ठाँव कुठाँव = उचित अनुचित स्थान। रोपल = रोपा हुआ, लगाया हुआ। कइलीहैं = कर लेंगे।

बादर आ गइल

●

डार - डार पात - पात छा गइल
बादर आइल, बादर आ गइल
धान उगल
जूड़ा में चान उगल
खाली खाली देहरी
पेहान उगल
माटी के ढिवरी कजरा गइल
बादर आ गइल।
दिया जरल
रहि-रहि के जिया जरल
मन लागल
पेड़ से, कनेर झरल
पकड़ी के पत्ता घबरा गइल
बादर आ गइल।
ओरी के जल
आँगन ताल भइल
धूआँ, धूआँ
जीअल काल भइल
कोने आँतर कुहरा छा गइल
बादर आ गइल।

रुबाई

●

रंग हऽ देखले से उतरि जाई
रोशनी हवा से सिहरि जाई
आदमी थोड़े हऽ जे बरदास करी
फूल ह छुवले से झरि जाई

चान उगल = चंद्रमा उदित हुआ। देहरी = डेहरी, कोठिला। पेहान = ऊपर का ढक्कन। ढिवरी = डिबिया जिसके मुँह पर बत्ती लगाकर मिट्टी का तेल जलाते हैं। पकड़ी = पाकड़। जीअल = जीवित रहना। काल्ह भइल = काल के समान हो गया। आँतर = (अंतर) कोना। बरदास = बरदाश्त। झरि जाई = झड़ जायगा।

जन्म—२५ अगस्त १९३२ ई० । **श्री महेंद्रकुमार सिंह 'नीलम'**

स्थान—गाजीपुर नगर ।

शिक्षा—बी० ए० (आगरा विश्वविद्यालय)। इसके अतिरिक्त चित्रकला में कई उपाधियाँ आपने प्राप्त की हैं ।

साहित्य—लेखनी तथा तूलिका के माध्यम से आप साहित्यसेवा में रत हैं । 'जियरा बोले (लोकगीत) नामक आपकी पुस्तक शीघ्र ही प्रकाशित होनेवाली है ।

कामना

आवत होइहैं .बदरा दुआर।
कि लेहले सनेसा पियार।
मनवा कऽ मोर आज ठुमुक-ठुमुक नाचेला,
पीपरा बइठ पुरुवा गितिया सुनावेला,
गावेला कजरी मल्हार······ ।

× × ×

नेहियाँ कऽ अवतऽ नदिया फफाई,
विरहऽ के परती कऽ देहिया जुड़ाई,
कि बूड़िहैं विपत्ति कछार······ ।

× × ×

बुनियाँ के संग नाची छम-छम पिरितिया,
ढही ढिमिलाई जइहैं दुखवा कऽ भितिया,
कि कटि जईहैं दरद कऽ भार······ ।

× × ×

सपना•के झिंगुरन कऽ बाजीं हो बसुरिया,
बेला नियर सुधिया कऽ खुली हो पँखुरिया,
कि गमकी पिरितिया कऽ हार······ ।

लेहले = लिए हुए। सनेसा = संदेश। पियार = प्यार। पीपरा = पीपल का .पेड़। नेहियाँ = स्नेह, प्रेम। फफाई = उफन उठेगी। बुनियाँ = बूँद। पिरितिया = प्रीति। ढही ढिमिलाई जइहैं = गिर पड़ेगी। भितिया = भीति, दीवाल। भार = बोझ। पखुरिया = पंखुड़ी। गमकी = महक उठेगा।

फागुन की साँझ

बनवा में चिरई गावे ले,
जियरा कऽ हलिया सुनावे ले,
सखियाँ में गते गते, मनवा डोलावे लागल
फागुन कऽ अब तऽ बयार हो।...

सुरुज कऽ मुँह भईलन लाज कि,
पोतले हो जइसे गुलाल कि,
सखियाँ के अँगना में होरी हुरदंग भईल,
भईल अबीरे कऽ मार हो।...

फुलवन में छिपलन बसवा,
जईसे गोरिया के अँखिया में कंत
मनवा हो झूमी जाला, भँवरा भईलन मतवाला,
देहिया के पावें ना सम्हार हो।...

इनरे पर पिए कोई भंग,
कोई फाग गावे बाजे मिरिदंग,
कि फागुन के अइते गऊवन कऽ रंग बदलल,
बदलल सब संसार हो।...

जाड़ बसेलन ओही पार,
कि चिरई कहेले पुकार,
अइसन जनाये लागल, गरमी के दुल्हा के
कान्हि पर धरि के आवत होइहैं कहार हो।...

चिरई = चिड़िया (कोयल)। हलिया = हाल। गते-गते = धीरे-धीरे। सुरुज = सूर्य, सूरज। जइसे = जैसे। हुरदंग = शोरगुल। भईल = हुआ मचा। छिपलन = छिपा हुआ। बसवा = वास, गंध। कंत = प्रिय। देहियाँ = देह। इनरे = कुआँ। मिरिदंग = मृदंग, ढोल। गऊवन = गावों। बसेलन = बसता है। ओही = उस। अइसन = ऐसा। कान्हि = कंधा।

जन्म—५ फरवरी सन् १९२३ ई० ।

श्री चंद्रमौलि उपाध्याय

स्थान—बरैनी, कछुवा, मिर्जापुर ।

शिक्षा—घर पर पिता से संस्कृत का अध्ययन तथा कलकत्ता विश्वविद्यालय में अंग्रेजी एम० ए० के छात्र ।

साहित्य—खड़ी बोली में नई कविता और गीत लिखने के साथ भोजपुरी के लोकगीतों की धुन में रचना करने की ओर की विशेष रुचि है ।

★

सुधि क मैना

अपने पिंजड़वा में पललीं हो
सुधि क मैना तोहारि।
नवरँगि अँखियाँ
सतरँगि पँखियाँ
देखि - देखि जियरा जियवलीं हो।
पिरिया क दनवाँ
वोधिया क मनवाँ
धइ धइ ठोरवा पियवलीं हो।
दिन दुपहरियाँ
राति अन्हरियाँ
नींदिया क पहरू बनवलीं हो।
भरलि पलकियाँ
ठरलि झपकियाँ
बीतलि गितिया गववलीं हो।
देइके केवड़िया
छुइके अँखड़िया
अन्हियाँ बतसवाँ बचवलीं हो।

●

पललीं = पाला। जियरा = जी। जियवलीं = जीवित रखा। पिरिया = पीर, पीड़ा। वोधिया = वोध। ठोरवा = ठोर को। पियवलीं = पिलाया। पहरू = पहरा देनेवाला। ठरलि = सुन्न। बीतलि = गत। गववलीं = गवाया। छुइके = छू कर। अँखड़िया = आँख। अन्हियाँ = आँधी। बतसवाँ = वायु, हवा।

सपना क गीत

हमरे सपनवाँ में अइबे हो साजन
तोहके सुनइबै बिहाग।
पुरुब के देसवाँ के जदुई गुजरिया से
छोरबै अँगुरियाँ तोहारि,
होइके जोगिनियाँ पढ़ब सब मंतर
झरबै नजरिया तोहारि,
अँचरा से पोंछब अँसुआ हो साजन
तोहके सिखइबै बिराग।
कुसुम्ही चुनरिया क महँकि उड़इबै
धइके अँजोरिया क पाँखि,
होइके तलैया पसरि जइबै रतिया के
भरि के कुमुदिनी क आँखि,
अपनी पँखुरिया पसरबै हो साजन
तोहके सुँघइबै पराग।
गितिया से भरबै कलसिया अकसवा क
लिपबै धरतियाँ पियार,
अँसुआ के करबै पुरोहित आपन
मनरथ लोहरा कोंहार,
नींदिया क छइबै मड़उवा हो साजन
तोहसे छुअइबै सोहाग।

●

बिहाग = विरह के गीत। जदुई = जादूगरनी। मंतर = मंत्र। झरबै नजरिया = लगी हुई बुरी नजर को (मंत्र द्वारा) झाड़ूँगी। तलैया = छोटा तालाब। कुमुदिनी = कुईं। सुँघइबै = सुँघाऊँगी। कलसिया = कलश। पियार = प्यार। मनरथ = मनोरथ। मड़उवा = मंडप, मांड़ो। छुअइबै सोहाग = सिंदूर लगवाऊँगी, ब्याह रचाऊँगी।

श्री एन्थोनी 'दीपक'

जन्म—१५ मार्च, सन् १९३३ ई० ।

स्थान—बेतिया, चंपारन (बिहार) ।

शिक्षा—बी० ए० ।

साहित्य—भोजपुरी तथा खड़ी बोली में कविता, कहानी और उपन्यास के आप लेखक हैं। 'परिचय' नामक कवितासंग्रह प्रकाशित हो चुका है। आपकी अप्रकाशित रचनाएँ निम्नलिखित हैं—

साथी आओ नाचो गाओ, गुनहगार, तूफान के तिनके, ताज, सबेरा, मिट्टी के पुतले; पतझड़, लकीरें मिटती हैं, आँसू के छींटे, दोस्त आदि।

५

जमुनी बदरिया

झर झर बरसेले जमुनी बदरिया—
ओरी से बड़ेरी ले भिंजाय
मेघवा के पट टारी झाँके ले बिजुरिया
दिअरा चँवर मुसकाय ॥

बरसीं हे इन्नर देवता, बरसीं हे सीता रानी
हमनी किसनवन के सब कुछ रउवे बानी,
कब से सबूर कइले, रउरे धियान धइले
ताकत बानी आसरा लगाय ॥

पोढ़-पोढ़ बाल लागी, अनजा के टाल लागी,
बेरही आ बखार भरी, फगुआ के ताल लागी,
रंग-आ अबीर उड़ी, पाकी मार पूआ-पूड़ी,
शिवजी के बूटी ना भुलाय ॥

रघुआ के माइ तोहके झुमका गढ़ाएब अबकी
हो सकी त इहे लगले झुलनी बनाएब अबकी,
झुमका पहिन रनिया, झुलनी झुलाय धनिया,
चलीहऽ झमकि झमकाय ॥

●

जमुनी = जामुन के रंग की, काली। बँड़ेरी = खपरैल की छाजन में मँगरे पर लगनेवाली लकड़ी। इन्नर = इंद्र। सबूर = सब्र, संतोष। बेरही = बखरी। आ = और। मार = अधिक मात्रा में।

एक मुट्ठी सरसो, झमर झमर बरसो ॥

गीत

●

बादल घिर घिर के आइल
सब के मनवाँ हर्षाइल,
एक मुट्ठी सरसो, झमर झमर बरसो ।

खेतन में पानी लागल
धरती के किस्मत जागल
चचलें भइया हरवइया
मनवाँ नाचे ता-थेइया
पूजा भाखेलीं धनिया
कजरी गावेली कनिया

बादल घिर-घिर के आइल
सब के मनवाँ हर्षाइल,
एक मुट्ठी सरसो, झमर-झमर.बरसो ॥

खेतन में सोना बरसी
केहू के मन ना तरसी
पौधन में बाली लागी
अनजा के टाली लागी
गाँवन के दुखड़ा छूटी
घर-घर में लड्डू फूटी,

बादल घिर-घिर के आइल
सब के मनवाँ हर्षाइल
एक मुट्ठी सरसो, झमर झमर बरसो ॥

भउजो के बनी झुलनिया
ननदो के नया नथुनिया
बबुनी के बनी बुलाकी
बुढ़ियो के जड़ल तराकी
बड़को के बढ़ियाँ काड़ा
छोटको के सुन्नर छाड़ा
बादल घिर-घिर के आइल
सब के मनवाँ हर्षाइल
एक मुट्ठी सरसो, झमर-झमर बरसो ॥

●

हरवइया = हलवाहे । कनिया = दुलहिन । टाली = ढेर । भउजो = भावज, भाभी । तराकी = तरकी, कान का एक गहना ।

जन्म—१४ जुलाई, सन् १९३४।

श्री जनार्दन पांडेय 'अनुरागी'

स्थान—बलिया, भागलपुर, देवरिया।

शिक्षा—परमहंसाश्रम बरहज में हिंदी, संस्कृत का अध्ययन।

साहित्य—भोजपुरी तथा खड़ी बोली में काव्यसाधना।

●

रमराजी

अनुरागी के देखि विरागी काहें दुनियाँ रोई।
देहियाँ धइले ना जानी कि केकर का गति होई ॥

हमरी घर के पाछे रहली ह बुढ़िया रमराजी।
जिनिगी भर विधवापन खेपली खइली सतुआ भाजी।
जनमें उनके बपसी मरलें गवना होते माई।
सेजिया चढ़ते पिया गुजरले एइसन करम कमाई।
ससुरे उनकी कोइला बरिसल नैहर भइल अन्हरिया।
बोझा भइलि जवानी दिन-दिन बैरिन भइलि उमिरिया।
सोना जेकर खाक हो गइल हीरा हो गइल माटी।
ऊ कइसे डोली दुनियाँ में कइसे जिनिगी काटी।
रमराजी नैहर में आके कइलिन दर-दर फेरा।
जेकर टुकड़ा खइली ओ दिन ओही की घर डेरा।
ईंटा उनके रहल सिरानी गुदरा भइल रजाई।
माथे पर सेवार छितराइल आँखिन गंगा माई।
राखी में आगी की एइसन लुगरी में सघुराई।
देखि-देखि के फटल करेजा केतना ई दुख गाई।

अनुरागी के देखि विरागी काहें दुनिया रोई।
देहिया धइले ना जानी केकर का गति होई॥

जवने राति के चान हेराइल ओकर कवन अँजोरिया।
जवने नदिया सूखल पानी ओकर कवन लहरिया।

जिनिगी जेकर रेत हो गइल ओोकर कइसन धारा।
ओकर कइसन उद्गम संगम ओकर कवन किनारा।
रमराजी कवने आगम पर सुधि के दियना बारें।
केकरे खातिर हँसि-हँसि आपन मातल रूप सवारें।
केकर रहिया जोहि-जोहि के सँझिया रोज बोलावें।
केसे मन के बतिया कहि-कहि रतिया के भरमावें।
होत विहाने हाथ जोरि के केकर सगुन मनावें।
मुँह पर जोति जगावे खातिर केके रोज जगावें।
कोंढ़ी जवन कीरिन ना देखलसि ओकर कवन कहानी।
वेइलि जवन अलम ना धइलसि ओकर कवन जवानी।
एइसन अधमारल जिनिगी पर के ना आँसु बहाई।
केकर काठ करेजा जे रमराजी के दुख गाई।

अनुरागी के देखि विरागी काहें दुनिया रोई।
देहिया धइले ना जानी कि केकर का गति होई॥

दुनियाँ अपने रंग में मातल आपन साज सवारे।
रमराजी मुँह में अँचरा दे हरदम सुसुकी मारे।
हाय गोसइयाँ दुख ना जनलऽ कइलऽ तू मनमानी।
रमराजी के आगी दीहलऽ अवरू सबके पानी।
जेकर साज विगड़वऽ ऊहे दर-दर ठोकर खाई।
अपनी मुअले छाती पर ऊहे कोदो दरवाई।
रमराजी के सखी सलेहरि हँसि-हँस ताना मारे।
भाई बहिनी टुकड़ा देत झइहावें दुतकारें।
केहू कहे पिशाचिन अबहीं केके केके खाई।
केहू कहे अभागिन अब से हमरे घर जनि आई।

दइबे की जारल ः जिनगी पर दुनियाँ नून लगावे।
ओकर के दाही दुनिया में जेके राम सतावे।
दहकलि जिनगी रमराजी के के ना खाक रमाई।
रमराजी की मरजादा पर के ना माथ नवाई।
अनुरागी के देखि विरागी काहें दुनिया रोई।
देहियाँ धइले ना जानी केकर का गति होई॥

●

अनुरागी = संसार के प्रति अनुरक्त। विरागी = विरक्त। देहियाँ = देह, शरीर। केकर = किसकी। का = क्या, कौन-सी। खेपली = बिताया। बपसी = बाप, पिता। एइसन = ऐसा, इस प्रकार का। कोइला बरसल = कोयला बरसा अर्थात् सत्यानाश हो गया। बैरिन = दुश्मन। जेकर = जिसका। ऊ = वह। कइसे = किस तरह। डोली = हिले-डुलेगा। गुदरा = गूदड़। सेवार छितराइल = रूखा-सूखा बाल बिखेरे हुए। राखी = राख। लुगरी = फटी पुरानी सारी। सुघराई = सुंदरता। केतना = कितना। ई = यह। जवने = जिस। चान = चाँद। ओकर = उसकी। कवन = कौन। आगम = आशा। दियना = दीपक। केकरे = किसके। मातल = मत्त। सँझिया = संध्या। केसे = किससे। कोंढ़ी = कली। बेइल = बेल, लता। अलम = अवलंब, सहारा। अधमारल = अधमरी। सुसकी मारे = रोती रहती। कइलऽ = किया। अवरू = और। मुअले = मृत। ऊहे = वही। कोदो दरवाई = कोदो दलवायेगा, विपत्तियों में पिसा जाएगा। सलेहरि = सहेलियाँ। झइहावें = फटकारें। केहू = कोई। केके केके = किसको किसको। दइबे = दैव, विधाता। नून = नमक। दाही = रक्षक। केना = कौन नहीं अर्थात् सभी।

श्री मधुकर सिंह

जन्म—१९३४

स्थान—धरहरा, शाहाबाद।

शिक्षा—बी॰ ए॰।

साहित्य—रुक जा बदरा (भोजपुरी काव्य) प्रकाशित है। आपकी कवितायें और कहानियाँ पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित होती रहती हैं।

महुआ के गीत

फूटेला किरिनियाँ, गगन मुसुकाइल, ए राजा, टपके महुइया जइसे लोर ।
फूटेला किरिनियाँ, गगन मुसुकाइल, ए रानी, महुए जिनिगिया बा तोर ॥
साल माथ दिन गुनी, जेहूँभा बटोरलीं, ए राजा, कइसन कमइया के दोस ।
जड़वा के सहि-सहि गेहूँ उपरजलीं, ए रानी, खाहीं के बेरवा मसोस ॥
गोबर से लिपल अँगनवाँ निहारे, ए राजा, अबकी कमइया मुआर ।
फाटत करेजवा के सबुर धरइह, ए रानी, हमनीं के हईं बनिहार ॥
सभ के बबुअवा के पुअवा छुनत होई, ए राजा, मोर बाबू छुछुनस अगोर ।
महुआ के चुनि-चुनि अँचरवा में दरिह, ए रानी, घोर दिह महुआ के लोर ॥
काहे के राम हमें मानुख बनवलन, ए राजा, कहिया ले जिनगी अन्हार ।
हरदम जिनिगिया ना दुख के गगरिया, ए रानी, जिनगी ह हँसुआ के धार ॥

●

जइसे = जैसे । लोर = आंसू । जिनिगिया = जिंदगी । बा = है । तोर = तुम्हारी । जेहूँभा = जिस तरह भी । कइसन = कैसी । उपरजली = उपजाया । बेरवा = समय, वेला । मसोस = मनोवेग को रोकना, इच्छा को दमन करना । मुआर = सूख जाना । सबुर = सब्र, संतोष । बनिहार = मजदूर । छुछुनस = जिद्द करता है । सभ = सब । लोर = रस । मानुख = मनुष्य । कहिया ले = कबतक ।

रुक जा बदरा

आग नियर धधकेला सरव धरतिया से,
लपलप लूकवा बधार।
सावन भदउआ में चटके सरगिया हो,
पानी बिनु पड़े हाहाकार।
कइसन मुदइया इनर ईसवरवा, जे,
अँखियाँ ना फफनेला लोर।
'सँपवा छोड़ेला सँपकेंचुल के मातल,
गंगा मइया बड़ी रे कठोर।'
चाहत इनर जदी आपन बड़इया हो,
करि द बअरिया दहार।
नाहीं त पियासल धरतिया सरापी तोहे,
सरग के जर दहिजार।
खच खच बाजे बालू रेत के डगरिया,
गाँव लागे मुरुदा बसेर।
लपलप लपकेला लूक तरुवरिया हो,
हमनी सरग के अहेर।

× × ×

पनपी पनपी केहु तरे दूगो बिरवा हो,
खिलल पीपरवा का तीर।
रोई-हँसी अबहूँ ले जिय ताड़े हीरा - मोती,
अगहन महिनवाँ आखिर।
हावा के बँसुरिया प तीसिया के गीत मीठ,
मन के बजाई देला तार।
माटी के उठाई धनी चू में धरी धरी राम,
उमड़ल अजुबा पियार।

× × ×

काहे दो ना भरि जाला लोरवा नयनवाँ में,
बिसरे ना बटिया तोहार।
देखि हीरा तोहरा के लोरबा ना थथमेला,
होइ जाला सपना उधार।
भूइयाँ देखत हीरा हर-हर रोवताड़ी,
सूखे नाहीं अँखिया के धार।
काँपे लागल ओठवा सनेहवा के बन्हले हो,
रहि रहि हहरे बेआर।

× × ×

एही तरे सही सही जार जमीदरवा के,
गइयाँ के करसी धुँआय।
सहत सितम तार साँसवा के काँपे लागे,
बाकी नाहीं आग अकुलाय।

●

बदरा = बादल । नियर = समान । सरब = सब। लुकवा = लू। बधार = बवंडर। भदउआ = भादो। सरगिया = स्वर्ग, आकाश। मुदइया= मुद्दई, शत्रु। इंनर = इंद्र। लोर = आँसू। सँपकेंचुल = सर्प के शरीर पर झिल्लीदार चमड़ा जो हर साल गिर जाता है। जदी = यदि। बघरिया दहार = मूसलाधार वारिश। सरापी = शाप देगी। दहिजार = गाली। मुरदा बसेर = श्मशान। तरुवरिया = तलवार। अहेर = शिकार। केहु तरे = किसी तरह से। बिरवा = पौधा। तीर = किनारे, पास, निकट। जिय ताड़े = जीवित हैं। अजुवा = अजब। काहे दोना = पता नहीं क्यों। लोरवा = आँसू। बटिया = बाट, राह। थथमेला = थमता नहीं। रोवताड़ी = रोती है। सनेहवा = स्नेह। हहरे = बहती है। बेआर = वायु। तरे = तरह। जार = जुल्म। गइयाँ = गाँव। करसी धुँआय = करसी की आग धूमिल हो जाती है। साँसवा = साँस।

जन्म—१ जुलाई, सन् १९३५ ई०

श्री हंसराज दुबे 'अनुपम'

स्थान—नारायण पाली, गड़वार, बलिया।

शिक्षा—इंटर, साहित्यरत्न।

साहित्य—प्रकाशित पुस्तकें—

धरती के फूल (कवितासंग्रह)

अप्रकाशित पुस्तकें—

१—मणियों की माला, २—प्रथम रश्मि, ३—जीवन के मधु बोल। खड़ी बोली तथा भोजपुरी की कविताएँ विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित होती रहती हैं।

भींजन लागे हो सखि ! ढाँपल अँचरवा

जड़वा के रतिया; कँपति बाड़ी छतिया; गरीबवन के हो,
सखि ! ठिठुरी - ठिठुरी के ।

कइसन इ भगिया; करम लागे अगिया; दुलभ भइले हो,
सखि ! रतिया में चिथड़ा ।

भर पेट दनवा भइल वा सपनवा कि सगवा से हो,
सखि ! दागि दे ले भुखिया ।

टूटही पलनिया में; धनि का जवनिया में, वेधऽ तारे हो,
सखि ! पवन के वानवा ।

एक ओर छतिया से; खटिया के पटिया से; लाइ सुते हो,
सखि ! आल्हर लरिकवा ।

चिहुँकि-चिहुँकि उठे; 'कहाँ-कहाँ' कइ उठे; जड़वा से हो,
सखि ! आल्हर लरिकवा ।

सुनि धनि खींचि ले ली; छतिया से लाइ ले ली; अँचरा से हो
सखि ! ढाँपेली गदेलवा ।

सोचि-सोचि दुःखवा; ढरल लागे लोरवा; भींजन लागे हो,
सखि ! ढापल अँचरवा ।

टूटही पलनिया में, विलखे जवनियाँ; ढरकि वहे हो,
सखि ! आसमान लोरवा ।

मड़ई वहरवाँ; धनि का दुअरवाँ; कउड़ तापे हो;
सखि ! धनि के पियरवा ।

भोर के पहरिया में, दुःख का डहरिया में; बोलि देले हो;

सखि ! मुरुगा पियरवा।

सुनि सोचे धनिया; गइल अब रतिया; भइल अब हो;

सखि ! सुख भिनसरवा।

●

ठिठुरी = कड़ी सर्दी से सिकुड़ कर। कइसन = कैसी। भगिया = भाग्य। दुलभ = दुर्लभ। चिथड़ा = फटा पुराना कपड़ा। सगवा = साग, सब्जी। पलनिया = झोपड़ी। धनि = स्त्री। बेध ता रे = छेद रहा है। बानवा = बाण, तीर। पटिया = पाटी। लाई = लग कर। आल्हर = अल्हड़। लरिकवा = लड़का। लाई ले ली = लगा लेती है। गदेलवा = छोटा लड़का। लोरवा = लोर, आँसू। मड़ई = झोपड़ी। कउड़ = कौड़ा, जाड़े के दिनों में तापने के लिए जलाई हुई आग। पियरवा = प्रिय, प्यारा। पहरिया = पहर। डहरिया = डगर, मार्ग। भिनुसरवा = भोर।

जन्म—१ जनवरी, सन् १९३५ ई० ।

श्री रामबहाल मिश्र 'बहाल'

स्थान—ग्राम जयापुर, वाराणसी ।

शिक्षा—हिंदी साहित्य संमेलन प्रयाग से साहित्यरत्न तथा काशी हिंदू विश्वविद्यालय से हिंदी और भूगोल में एम० ए० ।

साहित्य—आठवीं कक्षा से कविता लिखने में आप विशेष रुचि रखने लगे। भोजपुरी तथा खड़ी बोली पर आपका समान अधिकार है। आपके दो गीतसंग्रह यथाशीघ्र प्रकाशित होनेवाले हैं—

१—स्नेह-दीप (खड़ी बोली) ।

२—कहँरवा डोलिया दे उतार (भोजपुरी) ।

●

गीत

आयल बा पतझार वहन, लागा पछुवा पवनवाँ।
सूखल पतई क चउक पुराइल
बीचवा में पेंड़वा क मड़वा गड़ाइल,
दुलरू बसंत क कब तक होइहईं अवनवाँ।
दुलहिन खेतिया क तन पियराइल
रहि-रहि, हहरि-हहरि मुरझाइल,
कब अइहईं मधुमास क डोलवा कब होइहईं रे गँवनवाँ।
डरिया पर बउरी भइलीं कोइलियाँ
घुमि के निहारलीं सगरों डगरिया,
हमहन कुछ मनभायल देखलीं पियरका बिहनवाँ।
सब धन मिलि के सगुनवाँ मनउलिन
दुलहा बसंत क गीतिया उठउलिन,
आजु पतझार कबौं रहि रे मधुमास महिनवाँ।

●

पतझार = पतझड़। पतई = पत्ती। चउक पुराइल = चौक पूरा गया। मड़वा = मंडप। दुलरू = प्रिय। अवनवाँ = आगमन। डोलवा = डोला, पालकी। डरिया = डाल, शाखा। बउरी = बावली, पगली। सगरों = समग्र, सब। डगरिया = डगर, मार्ग। हमहन = हम लोग, हम सब। धन = युवती, स्त्री।

बरसात

भुँवरी बदरिया हमरी बखरिया हँस-हँस के बउराय गइल।
धान कियरिया अपने मन क हरियर चोलिया पाय गइल॥

मोर लहर नाचत बगिया में
कुह-कुह कोइल कूँकत बा,
तान भरत पेंड़वन क पतई
पुपुली बाँस बजावत बा,

मेंघा बोलल धरती धोतिया धो दे बदरा भइल मइल।
धान कियरिया अपने मन क हरियर चोलिया पाय गइल॥

भादों डोलिया में बुनिया के
ढोवै पवन कँहरवा रे,
आयलवा रतिया क पहरा
कइसन ई दुपहर बा रे,

अमवा क गगरी डरियन से बारी में पटराय गइल।
धान कियरिया 'अपने मन क हरियर चोलिया पाय गइल॥

चरवहवा क सुनत बिरहवा
गइया कान उठाय के,
सोहनी करत गुजरिया गावत
कनखी से समुझाय के,

रूप निहारत बा अकसवा धरती हहरि लजाय गइल।
धान कियरिया अपने मन क हरियर चोलिया पाय गइल॥

●

भुँवरी = भूरी। बदरिया = बदली। बखरिया = घर। बउराय गइल = फैल गई, छा गई। पुपुली = बाँस की पतली पोली नली। मेघा = मेढक। कियरिया = छोटे खेत। बुनिया = बूँद। बारी = बाग। पटराय गइल = फैल गई, बिखर गई। हहरि = सिहर कर।

जन्म—२० नवंबर, १९३५ ई० ।

श्री पांडेय सुरेंद्र

स्थान—कविकिंकर-कुटीर, शीतलपुर, पो० बरेजा, जिला सारन (बिहार) ।

शिक्षा—काशी हिंदू विश्वविद्यालय में सन् ५० से ५१ तक आई० एस-सी० के विद्यार्थी । विश्वभारती, शांतिनिकेतन के कलाभवन से कला-स्नातक की उपाधि-परीक्षा उत्तीर्ण ।

साहित्य—भोजपुरी तथा हिंदी में गीत, कविता, कहानी, नाटक, निबंध आदि का निरंतर प्रणयन । मुख्यतः गीतकार और कहानीकार । 'अँजोरिया' नामक भोजपुरी गीत और 'बबुआ के माई' नामक भोजपुरी कहानी (प्रकाशित) भोजपुरी तथा हिंदी गीतों के अलग-अलग संग्रह शीघ्र प्रकाशित होनेवाले हैं । रवींद्रनाथ की अनेक लघु-कथाओं का भोजपुरी में अनुवाद किया है । ललित कला एवं शिल्प विषयक निबंधों की रचना । कला-शिल्प विषयक कई ग्रंथों के प्रणयन में संप्रति लगे हुए हैं ।

अँजोरिया

ओढ़ेली रतिया चदरिया हो बुँटवा के बहार।
खुँटवा में बान्हल सनेहिया के सब रस
लजवा झुकावे पलकवा के वरबस
देखे चँदरमा सुरतिया हो घुघटा के उघार।
नदिया के तीर पर तन छपिटाला
धीरज ना धरेला मन अकुलाला
पनिया में झलके सँवरिया हो टिकुला ले लिलार।
निगचे पलानी से छमके सँवरिया
उपरे अकासवा में छिटके बदरिया
पनिया से भरे घइलिया हो बदरा के निहार।
डँड़वा पर धरेले भरल गगरिया
मेघवा पर झलकेला चाँद के सुरतिया
बिहँसि के मारे नजरिया हो कजरा से कटार।
टह-टह अँजोरिया में सरबस लउके
बिहँसे चँदरमा करेज मोर धड़के
होखेला अमृत जहरिया हो बलु रहित अन्हार।

अँजोरिया = चाँदनी। बुटवा = बूटे। खुँटवा = खूँट, छोर। बरबस = बलपूर्वक, जबरदस्ती। घुघटा = घूँघट। छपिटाला = छटपटाता है। अकुलाला = आकुल होता है। टिकुला = बड़ी टिकुली। निगचे = नजदीक, निकट। पलानी = झोपड़ी, छप्पर। घइलिया = घड़ा। निहार = देखकर। डँडवा = डाँड, मेढ़। गगरिया = घड़ा। मेघवा = बादल। कजरा = काजल टहटह = स्वच्छ, तेज चमक वाली। सरबस = सर्वस्व, सब। करेज = कलेजा, हृदय। होखेला = हो जाता है। जहरिया = जहर। बलु = बल्कि।

गीत

बीत गइल बरसात बाकिर अबही ले हिलोर बा।
चल गइलऽ तूँ एक घड़ी खातिर करके पहुनाई
जमल मोह ना छूट सकल केतनो कइलऽ निठुराई
ई मत सोचिह गइल त सभकुछ ले गइलऽ साथ
सूखल आँख भले बाकिर जियरा में छल-छल लोर बा।
पहिल गुलाबी सिहरन के, मत बुझिह, जाड़ ओराइल
तोहरे जहर जोगावे खातिर अवगे जहर घोराइल
केतना चढ़ी जड़इया के जर केतना निकली आह
जे अबहीं ले सहज बुझाता ऊ केतना घनघोर बा।
भीतर मन के रोज घटा केतना उमड़त आवेला
मन पर चमकत चोट, चले केतने बिजली के खेला
मन बूझे मन के राजा के घात, फूल के घात
कइसे कह दीं साफ, लुकाइल मन में कवनो चोर बा।

●

बाकिर = बाकी, शेष। हिलोर = लहर। केतनो = कितना भी। कइल = किया जाय। ई = यह। लोर = आंसू। ओराइल = समाप्त हो गया। जोगावे खातिर = सुरक्षित रखने के लिए। अवगे = अलग से। कइसे = कैसे। लुकाइल = छिपा हुआ। कवनो = कोई।

जन्म—१५ जुलाई, सन् १९३९ ई० ।

हृदयानंद तिवारी 'कुमारेश'

स्थान—रेवती, बलिया ।

शिक्षा—एम० ए० (हिंदी, आगरा विश्वविद्यालय १९५८ ई०) ।

साहित्य—क्रांतिदूत (खंडकाव्य) ।
अप्रकाशित पुस्तकें –
१—झंकार (गीतसंग्रह)
२—कुसुमांजलि (राष्ट्रीय गीत) ।

विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में आपकी रचनाएँ प्रकाशित होती रहती हैं ।

किसान

बढ़ि चल ! सानवा से देस के किसानवा।
गाइ - गाइ मानवा सुनावता सुगनवा,
बहे पुरवैया, भइल बा विहानवा।
चारूँ ओर होखे, अब भोजन - भजनवा,
लपकि - लपकि लोभे लगलें ललनवा।
जागि पड़ ! जागि पड़ ! बाजे ला बजनवा,
सँउसे सँउसार बाटे, तोहरे सरनवा।
तोहरे कमाई धरती के धन धानवा,
हवऽ तू महान, भगवान, कहे मनवा।
राजा अउरो रंक में तू फूँकेल परनवा,
तहरा ओर लागत बाटे, सबके नयनवा।
परती ओदार, उपजाव खूब अनवा,
काम कर, नाम कर, आपन वतनवा ॥

●

सानवा = शान। सुगनवना = सुग्गा, तोता। लोभे लगलें = लुभाने लगे। सँउसे = सब। सँउसार = संसार। सरनवा = शरण में। अउरो = और। रंक = दरिद्र। ओदार = कोड़कर। अनवा = अन्न। वतनवा = देश का।

विरह-गीत

हनि मारे बानवा मदनवा, सजनवा हो,
केरवा के पात जइसे बिहरेली छतिया।
नयना में भरि लोर, गिनि अँगुरी के पोर,
करतानी भोर, पढ़ि-पढ़ि प्रेम - पतिया।
किन्नर - नियर तोरी सुन्नर सुरति सैंया;
सुमिरि - सुमिरि के उमिरि लहकतिया।
धधके करेज, सेज, जोन्हीं की दरतिया में,
रतिया न भावे जइसे हई ई सवतिया॥

●

मदनवा = मदन, कामदेव। केरवा = केला। बिहरेली = फटती है। लोर = आँसू। गिनि अँगुरी के पोर = अंगुली पर एक-एक दिन गिनकर। नियर = समान। सुन्नर = सुंदर। करेज=कलेजा। जोन्ही की बरतिया = चाँदनी रात में। जइसे = जैसे। हई = है। सवतिया = सौत।

श्री उदयनारायण सिंह

जन्म—१४ दिसंबर, १९२९ ई० ।

स्थान—मरदह, गाजीपुर ।

शिक्षा—एम० ए० (भूगोल, काशी हिंदू विश्वविद्यालय) ।

साहित्य—भोजपुरी तथा खड़ी बोली में आपकी कविताएँ लोकप्रिय हैं ।

गीत

ना अइलै सइयाँ हमार सखि ! फागुन की रतिया।
अँखिया में रूप कै निखार सखि ! बिसरे ना बतिया॥

धरती सोहागिन कै माँग फरियाइल।
गहबरि-पियरी में चुनरी रँगाइल॥
सेनुरा से चमके लिलार सखि ! फागुन की रतिया॥

कोठवा पर नाचेले हमरी अजोरिया।
सेजिया की नीचवाँ लुकाइल अन्हरिया॥
दमके किरिनियाँ कै तार सखि ! फागुन की रतिया॥

सपना में सुधियन कै होला बटोर।
धड़-धड़ बहियाँ जगावें पिया मोर॥
ताकीं त उखिया में बोले सियार सखि ! फागुन की रतिया॥

रात भर झुरुकेले पछुवा बयार।
चढ़ली जवानी में सोरहो सिंगार॥
भूल गइलन पियऊ करार सखि ! फागुन की रतिया॥

लरिकलि रतिया त ढरकल चनरमा।
लोटेला सेजिया पर उचटल मनवाँ॥
डरपेला जियरा हमार सखि ! फागुन की रतिया॥

●

ना अइलें = नहीं आए। बिसरे ना = भूलती नहीं। सोहागिन = सौभाग्यवती। फरियाइल = साफ दिखाई पड़ने लगीं अर्थात् माँग भर गई। गहबरि = गहरे रंग में। सेनुरा = सेंदूर। कोठवा = कोठा। अजोरिया = चाँदनी। सेजिया = शय्या। लुकाइल = छिप गई। दमके = चमकता है। सुधियन = सुधि, याद। बटोर = जमाव। मोर = मेरा। ताकीं त = ताकने पर, देखने पर। उखिया = ईख का खेत। झुरुकेले = बहती है। गइलन = गए। करार = वादा। लरकल = झुक गई। ढरकल = ढुलक गया। चनरमा = चंद्रमा। उचटल = उचटा हुआ, उद्विग्न। डरपेला = भयभीत होता है।

गीत

लिखि - लिखि पतिया बोलवलीं हो ! कलकतवा की ओर ।
सखि घर - अँगना बहोरलीं हो ! अइहैं सजना जे मोर ॥
तेल-बाती पूरि-पूरि दियना जरवलीं ।
धूप-अगियारी देइ घर महकवलीं ॥
चुनि-चुनि सेजिया सजवलीं हो ! चंपा कलियन बटोर ॥
अतर - गुलाब, फुलेल लगवलीं ।
गुथि-गुथि केसिया के मँगिया सवरलीं ॥
भरि - माँगि सेनुरा लगवलीं हो ! चमके एहवात मोर ।
झाँकि-झाँकि खिरकी से आधी रात जोहलीं ।
भरमलि अँखिया त अचरा पसरलीं ॥
सिढ़िया सरगवा लगवलीं हो ! बान्हीं सपनन की डोर ॥
सपना में सइयाँ से बात बतियवलीं ।
मन कै मलाल सब कुछ कहि डललीं ॥
ताकीं त किछु नाहीं पवलीं हो ! होइ गइलन भोर ॥

●

पतिया = पत्र । बहोरलीं = झाड़ू से साफ किया । सजना = सज्जन, प्रियतम । दियना = दीपक । जरवलीं = जलाया । अगियारी = आग में सुगंधित द्रव्य डालना । बटोर = एकत्र कर । अतर = इत्र । फुलेल = सुगंधित तेल । केसिया = केश, बाल । सवरलीं = सँवारा । एहवात = सौभाग्य । जोहलीं = देखा । भरमलि = नींद आने लगी। अचरा = आँचल । सरगवा = स्वर्ग में । सपनन = स्वप्नों । बतिअवलीं = बातें की । मलाल = रंज दुःख । कहि डललीं = कह डाला । पवलीं = प्राप्त किया ।

जन्म—२१ जनवरी, सन् १९३९ ई० **श्री कमलेश्वर प्रसाद श्रीवास्तव**

स्थान—महादेवा पथ, आरा (बिहार)।

शिक्षा—हाई स्कूल (१९५४ ई०)।

साहित्य—भोजपुरी और खड़ी बोली की आपकी रचनाएँ 'आज' एवं 'नव भारत टाइम्स' दैनिक में प्रकाशित होती रहती हैं। साहित्य के प्रति आपका झुकाव बचपन से ही है।

गीत

चलि भइली नदिया के ओर साँवरि गोरिया ॥
डँड़वा प धइले बाड़ी माटी के गगरिया,
गगरी प हाथ सोभे हरी हरी चुरिया।
अँचरा उड़ेला फर-फर साँवरि गोरिया ॥
चलि भइली नदिया के ओरि साँवरि गोरिया ॥
कतनो बुड़ावे नहीं बुड़ेलीं गगरिया,
भरवा से मातल ना नीहुँरेली गोरिया,
पनिया में झलकेला गोरी के मुरतिया,
मारेली मुसुकिया के तीर साँवरि गोरिया ॥
चलि भइली नदिया के ओरि साँवरि गोरिया ॥
जइसन चनरमा प मोतिया के पँतिया,
टुपके पसेना तस काँचे रे उमरिया,
डँड़वा प छलकेला माटी के घइलिया,
मटिया प माटी के सिंगार साँवरि गोरिया ॥
चलि भइली नदिया के ओरि साँवरि गोरिया ॥
धूमिल अँचरवा में रूप के नगरिया,
निहुरि उतारि धरे खेतवा कगरिया,
निरखेलीं धनवाँ के धानी रे चुनरिया।
झुरु झुरु बहेला बेयारि साँवरि गोरिया ॥
चलि भइली नदिया के ओरि साँवरि गोरिया ॥
लहलह लहसल धान के किअरिया,
कनखी चलावे खाढे मोहे रे कगरिया,
रहिं रहि रोके रामा आस के डगरिया।

धीरे धीरे चलेली चमकि साँवरि गोरिया ॥
चलि भइली नदिया के ओरि साँवरि गोरिया ॥

मनवा में रहि जाला मनवा के बतिया,
कहवाँ हो बसे जाइ पिया निरमोहिया,
खने देखे घरे ओरि खने देखे रहिया।

चिहुकि चिहुकि रहि जाली साँवरि गोरिया ॥
चलि भइली नदिया के ओरि साँवरि गोरिया ॥

चुप होखु चुप होखु पिया के सँवरिया,
जुरुते घघाई तोरा आस के नगरिया,
सोनवा सोहाग लेले आई परदेसिया।

मोतिया झरिहें तोरे ओठ साँवरि गोरिया ॥
चलि भइली नदिया के ओरि साँवरि गोरिया ॥

●

चलि भइली = चल पड़ी। डँड़वा = मेंड़। बुड़ावे = डुबाती है। भरवा = भार। नीहुरेली = झुकती है। झलकेला = झलकती है। मुसुकिया = मुसकराहट। काँचे = कच्ची। घइलिया = छोटा घड़ा। कगरिया = पास, निकट। निरखेली = देखती है। झुरु-झुरु = मंद गति से। बहेला = बहती है, चलती है। लहसल = लहराती है। कनखी = टेढ़ी चितवन। खाढ़े = खड़ी होकर। माहे = मध्य, बीच। कहवाँ हो = न जाने कहाँ पर। खने = क्षण। जुरुते = शीघ्र ही। घघाई = पूरी होगी।

बसंत

सजग सजग सजग कवि जगाले भावना सुतल,
चल कलम ले हाथ में कि मच गइल उथल-पुथल।
वधार गहगहा गइल कि बाग गमगमा उठल,
कलियन के गलियन में भँवरा गुनगुना उठल,
सनेह छलछला उठल बहार के समा जुटल,
गली - गली घरे - घरे वतास आ बता गइल।
बसंत फेर आ गइल॥
गुमान जाड़ राड़ के दहाड़ के भुला गइल,
बुँटवन प नोनीं चढ़ल मटर गदरा गइल,
तेलहन के माथ पियर पगरी वन्हा गइल,
दाँतन पर तीसिन के मीसी लहरा गइल।
वसंत फेर आ गइल॥
मदना के तीर छुटल सेमर के सीर फुटल,
कोइल के धीर छुटल पपीहा के पीर उठल,
महुआ के कोंचवा से मधुवा के बुन्न चुवल।
कटहर लेंढ़िया गइल कि बड़हर पियरा गइल।
वसंत फेर आ गइल॥
कली-कली बिहँस उठल छली भँवर लुभा गइल।
गली - गली में जोस नया बेकली के छा गइल,
गिलास पर गिलास पी वतास तलमला रहल,
बतस गइल वियोगिनी वियोग से झुलस गइल,
वसंत फेर आ गइल॥

●

सुतल = सुप्त। वधार = बखार। समा = दृश्य। जुटल = जुट गया, एकत्र हो गया। वतास = वात, वायु। फेर = फिर। राड़ = नीच, कष्टद। बुँटवन = चना के पौदे। नोनी = लावण्य। गदरा गइल = दाने से भर गया। मदना = मदन, कामदेव। मधुआ = मधु। बुन्न = बूँद। लेंढ़िया गइल = फल लग गया। वेकली = आतुरता। तलमला = तिलमिलाना। बतस गइल = वायु से पीड़ित हो गई, पागल हो गई।

श्री हरिराम द्विवेदी

जन्म—१२ मार्च, सन् १९३९ ई०।

स्थान—शेरवा, मिर्जापुर।

शिक्षा—बी० ए०।

साहित्य—भोजपुरी तथा खड़ी बोली में लिखने की आपकी विशेष रुचि है। विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में आपकी रचनाएँ प्रकाशित होती रहती हैं।

बखान

●

अपने अपन करी केतनी बखान हो।
सासु मोरी धरती ससुर असमान हो।
लहुर देवरवा मोरी अँखिया क पुतरी।
सासु जी के अँचरा के कोनवाँ परान हो,
जेठउत हमरे ससुरु क दुलरुवा
गंगा अस निरमल हमरी जेठान हो।
ननदी हमार पुनवांसी क अँजोरिया,
सइयाँ मोरा उगें जइसे सुरुज विहान हो।
नइहर मोर जइसे जलभर बदरा,
मोरे ससुरे वइसें लहरे सिवान हो।

लहुरा = (लघु) छोटा। जेठउत = जेठ, पति के बड़े भाई। जेठान = पति के बड़े भाई की पत्नी। पुनवांसी = पूर्णमासी। सइयां = स्वामी, पति। वइसें = वैसे। लहरे = लहराए।

हे गंगा मइया

हे गंगा मइया तोहरी दोहइया लाग सहइया हमार
मोरी वलइयन टार
सधिया हमारी जइसे कुँवारी घीया क कोरवर माँग
कोरवन लाल बिना लागे सून सोहागिन केरि सवाँग
वइसैं लागे उदास लागे जइसे फुलवा पत्तिया बिन डार
विधना क लिखल करम गति मोके मारी विपतियन क बान
कोखिया क मार असह अस लागे जस केहू छूवे परान
मेहना सुनत मोरा हियरा फाटेला जइसे करइल फाटे दरार
सोने के कटोरवा में दुधवा क सपना गोदियाँ चन्ना अस लाल
भरिदा हो मइया अचरवा पसारी ठाढ़ी कररवाँ विहाल
लाज लुकाई पीर समाई अँखियन में रस खार
चन्नन नइया चढ़हबे हो मइया सोने सिन्होरवाँ सोहाग
चानी के चउकी चुनरिया चढ़इबे जउ लउटी मोर भाग
घिउवा क दियना लहरिया बहइबे भरि भरि फुलवन थार।

●

बलइयन = बलाय, विपत्ति। सधिया = (श्रद्धा) साध। कोरवर = अछूती। सवांग = स्वांग, शृंगार। कोखिया = कोख। परान = प्राण। मेहना = ताना, लगने वाली बात। करइल = करैल, काली मिट्टी। चन्ना = चाँद। कररवाँ = करार, तट। चन्नन = चंदन। सिन्होरवा = सिंदूरदान। चानी = चाँदी

जन्म—फाल्गुन वदी त्रयोदशी संवत् १९९२ । श्री ऋषिनारायण 'पावन'

स्थान—सुधवै (भंगापट्टी) वाराणसी ।

शिक्षा—एम० ए० (हिंदी) एम० एड०, काशी हिन्दू-विश्वविद्यालय ।

साहित्य—प्रकाशित रचना—

कलरव (काव्य)

अप्रकाशित रचना—

कल्याणीकल्प (उपन्यास)

केकरा पर करीं जा सिंगार (भोजपुरी गीत) ।

गीत

पुसवा लगल, पड़े लागल तुसरवा।
पिया विनु केकरा पैं करींजा सिंगरवा॥

× × ×

रतिया में जागि जागि करींला विहनवाँ,
सीतवा से थर थर काँपेला वदनवाँ;
चैनवाँ न पावे, भयल विकल हियरवा···।

× × ×

पूसवा के दिनवाँ में हँसेला सिवनवाँ,
मटर गुजरिया भरेला मुसकनवाँ;
चनवाँ की सानवाँ जरावेला जियरवा···।

× × ×

वोटवा की धूम मचल गँवई डगरिया,
नेतवा भयल खातिर होवेली तयरिया;
हमरा न जाने कब होइहैं भिनुसरवा···।

× × ×

पूसवा लगल, पड़े लागल तुसरवा।
पिया विनु केकरा पैं करींजा सिंगरवा!!

पुसवा = पौष, पूस का महीना। तुसरवा = तुषार, पाला। केकरा पै = किस पर। चैनवाँ = चैन। हियरवा = हृदय। हँसेला = खिल जाता है, हरा भरा हो जाता है। चनवाँ = चना नामक अन्न। सिवनवाँ = हरा भरा मैदान। सानवाँ = शान। वोटवा = वोट, चुनाव। गँवई = गाँव। धूम मचल = धूम मच गई। भिनुसरवा = प्रातः काल (अच्छे दिन)।

बिहान

उठ! उठ! भारत भूमि के ललनवाँ! बिहनवाँ आइ गयल।

× × ×

पुरुब देस में छउलेस भाई! नव विकास के लाली,
उठ! उठाव, सब भाइन के भरि ले घरवा खाली;
बिहनवाँ आइ गयल।

लहर – लहर लहराइ नहरिया, 'ट्यूववेल' हहरावै,
गाँव – गाँव में गइल सड़किया, घरे – घरे पहुँचावै;
बिहनवाँ आइ गयल।

गाँव – गाँव में खुलल मदरसा, लइकन के पढ़वावऽ,
तरह – तरह के बुद्धि सिखावऽ, जग में नाम बढ़ावऽ;
बिहनवाँ आइ गयल।

तोहरे घर में खुलल अदालत, पइसा जीन बहावऽ,
पंच सभापति तुँह ही भइलऽ, सब झगड़ा निबटावऽ;
बिहनवाँ आइ गयल।

हरी – भरी होइ जाइ जिंदगी, सब दुख दूर भगावऽ,
'भारत माता की जय' बोलऽ, जीवन सुफल बनावऽ;
बिहनवाँ आइ गयल।

× × ×

उठ! उठ! भारत भूमि के ललनवाँ! बिहनवाँ आइ गयल!!

●

ललनवाँ = लाल, नौजवान। छउलेस = छा गई। हहरावै = तेजी से पानी बहाता है। खुलल = खुल गया। लइकन = लड़कों को। जीन = मत, नहीं। निबटावऽ = निपटा दो, मिटा दो।

जन्म — १ जनवरी, सन् १९३७ ई० ।

श्री रामवृक्ष राय 'विधुर'

शिक्षा—हाई स्कूल । तत्पश्चात् स्वतंत्र रूप से अध्ययन।

साहित्य—खड़ी बोली और भोजपुरी दोनों में आप कविताएँ और कहानियाँ लिखते हैं । 'बिहान' और 'अँजोर' में आपकी रचनाएँ प्रकाशित होती रहती हैं ।

'गरिमा' नामक गीतसंग्रह यथाशीघ्र प्रकाशित होने वाला है ।

★

बरखा गीत

बरिसेला पनियाँ पावस के बदरवा, झुरुकि बहे ना
पुरवइया . बयरिया ।
नाचेला मोरवा, बोलेली कोइलरिया, फँफाई गइली ना
सखि ! तलवा-तलइया ।
हरियर लहँगा पहिरि हँसे भूँइयाँ, लहर मारे ना
सूगा - पँखिया अँचरवा ।
पिआ - पिआ रटे रामा पापी पपीहरा, दरद उठे ना
मोर आल्हर करेजवा ।
गरजे बदरवा, झँकोरेला पवनवाँ, पिआ रे विनु ना
काटे धावेले रइनियाँ ।
टिपिर - टिपिर गिरे ओरिया के पनियाँ, उचटि जाला ना
सखि ! मोर काँच निनियाँ ।
चमके बिजुरिया कि धड़के ले छतिया, कहाँ रे होइहें ना
मोरा आँखि के पुतरिया ।
मारेला बानवाँ बेदरदी मदनवाँ, नाहीं रे भावे ना
मोरा फूल के सेजरिया ।
वरिसल पनियाँ, अघाइल किसनवाँ, जुड़ाई गइली ना
रामा धरती के छतिया
चितवत रहिया झुराई गइली अँखियाँ, सिराई गइली ना
सखि ! पावस के रतिया ।

●

झुरुकि = झुरझुर । फँफाई गइली = उफन गई । तलवा = तालाब । सूगापँखिया = सुग्गे के पंख के समान रंगवाला । आल्हर = अल्हड़ । रइनियाँ = रैन, रात । निनियाँ = नींद । मदनवाँ = (मदन) कामदेव । अघाइल = तृप्त हुआ ।

गीत

जोम भरल दिन आइल रे !

जेनी देखीं आँखि फेरि के लउके हरियर धान।
दे-दे ताव मोंछि पर गावे बिरहा चतुर किसान।
चवा-चवा भूइयाँ में ई कइसन उन्माद समाइल रे!
जोम भरल दिन आइल रे !

बैला बइठल पगुरी माँठे, गइया करे चराउर।
खेत-खेत में कइले बाटे पनियाँ खूब हिराउर।
बछड़ा घुमड़े द्वार-द्वार पर लउके सभे अघाइल रे!
जोम भरल दिन आइल रे !

कइसे बीती दिनवाँ तिरिया कोठिला खोलि दिखावे।
गइल माघ दिन उन्नतीस बाकी, कहि किसान समझावे।
कुछ लागलि मुँह बालि, दनाइलि, कुछ लउकल पिअराइल रे !
जोम भरल दिन आइल रे !

●

जोम = उमंग। जेनीं = जिधर भी। चवा चवा = चप्पा चप्पा। पगुरी माँठे = पागुर करता है। करे चराउर = चरती है। कइले ... हिराउर = पानी भर गया है। कोठिला = कुठला, अनाज रखने का मिट्टी का बड़ा बरतन। दनाइल = दाना लिये हुए।

श्री चंद्रभूषण मिश्र

जन्म—२६ जून १६२७ ई०

स्थान—वाणी वितान भवन, ब्रह्मनाल वाराणसी।

शिक्षा—एम० ए० (प्राचीन भारतीय संस्कृति तथा इतिहास) सागर विश्वविद्यालय।

साहित्य—चित्रकला तथा कविता और कहानी लेखन में आपकी विशेष रुचि है।

प्रकाशित पुस्तकें—

ऋचाएँ (कवितासंग्रह)

आपकी कहानियों का अनुवाद अंग्रेजी में भी हुआ है।

तूँ हमार के हौवऽ

हमरे अभाव के दरपन में तूँ झाँकि-झाँकि जालऽ
हमरे उसाँस के पत्थर पर मूरत केकर गढ़ जालऽ
धड़कन कऽ छेनी खनन-खनन दिन-रात बजावे लऽ
का मूर्तिकार तूँ हौवऽ

भिनसहरे तूँ रंग सोनहुला फूंक उड़ावे लऽ
दुपहरिया के छाती दुधिया रंग बहावे लऽ
साँझ पहर जोगिया रंग में सब चित्र खचावे लऽ
का चित्रकार तूँ हौवऽ

किसिम-किसिम कऽ खेल देखा के तूँ भरमावे लऽ
मन के सुतले पर भी आपन रास रचावे लऽ
रंग-विरंगा भेस बदल के रंग जमाव लऽ
का कलाकार तूँ हौवऽ

कोलाहल में सन्नाटा कऽ तबला ठनकावे लऽ
अँधियरिया में भी सितार कऽ तार मिलावे लऽ
स्वर तोहार जैसे अकाश गंगा ढरकावे लऽ
का गीतकार तूँ हौवऽ

तूँ जनम-मरन के दुविधा में हमके टरकावे लऽ
जीवन अदमी कऽ पानी कऽ हरदम ढरकावे लऽ
मन के भीतर बैठल बैठल बाहर बहकावे लऽ
जियरा कऽ हमरे बस अधार तूँ हौवऽ

●

दरपन = दर्पण। उसाँस = उच्छ्वास। मूरत = मूर्ति। केकर = किसकी। भिनसहरे = प्रातः। दुधिया = दूध के समान स्वच्छ। जोगिया = गेरुवा। किसिम = क़िस्म, भाँति। तोहार = आपका। दुविधा = द्विविधा, संशय। अदमी = आदमी। का = क्या!

बरदान

हे शंकर भगवान हमें तूँ दऽ ऐसन बरदान
छोटी सी बस डोंगी दे दऽ
निपटे जाईं पार
साफा पानी चौचक होवे; चौचक छानी भाँग
और फिर करीं गंग स्नान
सिल बट्टा दऽ और भाँग दऽ
रहे ठंढई भी भरपूर
दुनियाँ से मतलब ना हमके
रहीं सदा झंझट से दूर
छेड़ीं बस मस्ती कऽ तान
चुंननदार कुर्ता मलमल कऽ
और दुपट्टा गरदन पर
खस कऽ अतर एक फाहा दऽ
थोड़ी सा कपड़ा में रगड़ीं
खोंसी अपने दूनों कान
रोज साँझ के गहरेबाजी
राजघाट के पुल पर
चंनन कऽ टीका लीलार पर
खड़ी चुटैया माथे पर
चलीं मूँछ और सीना तान
तोहरे द्वारे जब हम आईं
हरहर महादेव चिल्लाईं
दूध मलाई हर दम पाईं
भरल रहे हरदम बस मुँह में
मगही कऽ दुइ बीड़ा पान ॥

ऐसन = ऐसा। चौचक = खूब अच्छी तरह से। चुननदार = चुना हुआ। अतर = इत्र। गहरेबाजी = एक्के की तेज दौड़। चंनन = चंदन।

श्री सतानंद उपाध्याय

जन्म—३० जून, सन् १६३८ ई० ।

स्थान—ग्राम महामोदपुर, आजमगढ़ ।

शिक्षा—हाई स्कूल ।

साहित्य—भोजपुरी तथा खड़ी बोली में गीत लिखने की आपकी अभिरुचि है ।

गीत

सॉँझि भइल साजन ना अइलें

सॉँझि भइलि साजन ना अइलें डगर दूर लें सूनी हो।
दिन क बिछुड़ल उड़ल पँखेरू आँकत पथ की दूरी।
अँखियन में पच्छिम की लाली पँखियन में मजबूरी।
मन में चलत विचार कि घरवाँ जोहत होइहें लरिके।
सुसुकति होइहें चिरई बेसुध अँखियन में जल भरिके।
फरकति पाँखि थकन के मारे रहिया होइ रहि दूनी हो॥
चमकलि टिकुली आसमान में डहडह उगलि अँजोरिया।
हुचुकी आवे होस दिआवे सूनी परलि सेजरिया।
नदिया के घटवा पर गूँजे होहइया होहइया।
का जाने कहिं आवत होखें देवर जी क भइया।
कागा के दुपहरे खिअवलीं दूध भात क दोनी॥
रहि रहि उमड़ं बदरी सुधियन क अँखियन के रहिया।
का जानी भगवान अँचरवा भरिहें हमरा कहिया।
फरके अँखिया मनवाँ क बिसवास तनिक ना डोले।
अजुवे आवे क दिन अंतिम पतिया साफे बोले।
जो नहि अइहें आजु सजन कुछु होइ जइहें अनहोनी हो॥

पँखेरू = पच्छी। लरिके = लड़के। साफे = साफ, सत्य ही।

श्री दिनेश 'भ्रमर'

जन्म—१७ अक्टूबर, सन् १९३१ ई०।

स्थान—ग्राम पठखौली, चंपारन (बिहार)।

शिक्षा—बी० ए० आनर्स (हिंदी १९५६), पटना विश्वविद्यालय से एम० ए० (हिंदी १९६१)।

साहित्य—भोजपुरी तथा खड़ी बोली की आपकी रचनाएँ विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित होती रहती हैं।

गजल

●

आँख में आके बस गइल केहू।
प्रान हमरो परस गइल केहू ॥
हमरे लीपल पोतल अँगनवा में ;
बनके बदरा बरस गइल केहू ॥
गोर चनवा पे ई साँवर अँधेरा ;
देखि के बा तरस गइल केहू ॥
फूल त काँट से ना कहलस कुछ ;
झूठे ओकरा पे हँस गइल केहू ॥
कंठ के जब बजल पिपिहरी तब ;
बीन के तार कस गइल केहू ॥

●

केहू = कोई। चनवा = ललाट (अथवा चंद्रमा = मुँह)। ओकरा = उसके।

गजल

नजरिया के बतिया नजरिया से कहि द ।
ना चमके सोनहुला किनरिया से कहि द ॥
नयन में सवनवाँ बनल बाटे पाहुन ।
सनेसवा जमुनिया - बदरिया से कहि द ॥
लिलारे चनरमा के टिकुली बा चम - चम;
लुका जाय कतहूँ अन्हरिया से कहि द ॥
न आवेले सब दिन सुहागिन ई रतिया ,
तनी कोहनाइल उमरिया से कहि द ॥
नयन के पोखरिया भइल बाटे लब - लब ,
ना छलके भरलकी 'गगरिया से कहि द ॥

●

रुबाई

मन के बछरू छटक गइल कइसे ,
नयन - गगरी ढरक गइल कइसे ।
हम ना कहनी कुछ बयरिया से ;
उनके अँचरा सरक गइल कइसे ॥

●

सनेसवा = संदेश । जमुनिया = काली । कोहनाइल = रूठी । भरलकी = भरी हुई । बछरू = बछड़ा ।

श्री जगदीशचंद्र मिश्र

जन्म — १६ जुलाई, सन् १९३९ ई० ।

स्थान - मिश्रधाम, तिलाठी, मिर्जापुर ।

शिक्षा—हाई स्कूल, विशारद ।

साहित्य—भोजपुरी तथा खड़ी बोली में लिखने की आपकी रुचि है। प्रमुख पत्र-पत्रिकाओं में आपकी रचनाएँ प्रकाशित होती रहती हैं।

गीत

आवै जब सुधिया तोहार हो सनेहिया
मोरे जियरा में उठेला जुआर।

घेरे लागे बदरा झरन लागे पानी
भींगी भींगी धोतिया कमर में सुखानी
विरहा जगावे विरहा क कुछु बानी
तनवा क वनवा चलावै देवरानी।
निदिया न लागे राति चदरा जौ तानी
मोरि खोलि जाला पुरुआ केवार।

पनिया के धरिया से चूवै लागी ओरी
बढ़िया आयल मोरे गँउआँ की खोरी
लागि बा अकसवा से धरिया क डोरी
तोहरे बिना मैं साँवरि देहियाँ ई गोरी
मानि जाउ बदरी मइँ हाथ पाउँ जोरी
मोर टूटि जाये अँसुवा क हार।

अँखिया के पुतरी पै नाचेली सुरतिया
बिजुरी के चमके से काँपि उठे छतिया
दियना में जोति नाहीं आवै बिनु बतिया
गइल बिदेसवाँ पठावे नाहीं पतिया
बइठि गँवावों पिया मइँ सारी रतिया
तोहरी डगरिया निहार।

धोइ गइले कजरा नयनवाँ के पानी
देहियाँ में तेलिया चलावै जइसे घानी
उड़ि उड़ि बदरा एकास फहरानी
काढ़ेला करेजवा धनुहियाँ के तानी
रहि रहि सुधि आवै बीतलि कहानी
जब मिला रहा मोर दिलदार।

जियरा = हृदय। जुआर = ज्वार। बिरहा = बिरह, वियोग की पीड़ा। बिरहा = गीत विशेष। तंनवा = ताना। केवार = किवाड़, दरवाजा। बढ़िया = बाढ़। खोरी = गली। धरिया = धार। मइँ = मैं। दियना = दीप, दिया। बतिया = बाती। डगरिया = डगर, रास्ता। एकास = आकाश।

अँजोरिया

उतरै उपराँ से अँजोरिया, मोर सेवनियाँ चमकै राम।
केकरे बेटवा क रक्खल बा दूध से भरल कटोरा
चानी क चूरन के छींटै भुइयाँ भरि-भरि झोरा
खेलै तलवा पर किरनियाँ रातरनियाँ गमकै राम।
केकर सूखत बाटै सगरौं धोवल उज्जर खादी
धोबिन कवन एकास से लेइगै बादर चादर लादी
कहवाँ धोवै कहवाँ गावै सारी रतिया छीओ राम।
कवने पुरुष के खातिर रतिया राति-राति भरि जागै
कवने भागिमान से गोरकी प्रेम क भिखिया मांगै
केकरे खातिर ई तिरियवा सारी रतिया ठमकै राम।
धनि ऊ धरती जहवाँ आइ के बिरमै अइसन बेला
जेकर हौ बजार ऊ कइसन बैपारी अलबेला
फेंकै चंदा क रुपैया सारी रतिया ठनकै राम।

●

सेवनियाँ = सिवान। भुइयाँ = भूमि। तलवा = ताल। रातरनियाँ = रात की रानी नामक फूल। कवने = किस। भागिमान = भाग्यवान। गोरकी = गोरी स्त्री। तिरियवा = स्त्री। बिरमै = विलम्ब करे, रुके। बैपारी = व्यापारी।

श्री चितरंजन

जन्म—१५ जनवरी, सन् १९४० ई०।

स्थान—जमालपुर, विक्रम, पटना।

शिक्षा—बी० ए०।

साहित्य—लगभग तीन सौ भोजपुरी की कविताएं अप्रकाशित रूप में पड़ी हुई हैं।
पत्रकारिता तथा लेखन में विशेष रुचि है।
संप्रति साप्ताहिक शाहाबाद का संपादन कर रहे हैं।

फुटपाथ

छिटकल लाली अब भइल विहान, तनी जाग ना जवान फुटपाथ के।
लहकत लहर तपावेला देहिया,
जेठ दुपहरिया के तवँठल जमीनियाँ
ताहिरे जमीनियाँ प पड़ल बेसुध—
एगो तोपनो त नइखे तहरा माथ के—तनी जाग ना जवान फुटपाथ के।
झम झम झम झमकावेला बदरवा
तहरो मेहरिया के तार - तार अँचरवा
ताहि रे अँचरवा में बिलखे पिअरवा
देख ई जुलूस बरसात के—तनी जाग ना जवान फुटपाथ के।
जाड़ के अफतिया में किटकिट दाँत करे
टटिया में लिपटल थर-थर गात करे
एही रे जुलूमियाँ में बीतल जिनिगिया
ना जानल सुख-संग साथ के—तनी जाग ना जवान फुटपाथ के।
बाबू लोग घूरि-घूरि अँगुरी देखावेले
साला बेटा कहि-कहि रोब जमावेले
बेटी लखमिनियाँ प अँखिया नचावेले
छाड़ि देले लाज के हेआत के—तनी जाग ना जवान फुटपाथ के।
अजब समइया गजब ई त हाल बा
जेही बिसुकरमा सेही त फटेहाल बा
रचेला कँगूरवा से फूसो खातिर खखनेला
छछनेला एक मुट्ठी भात के—तनी जाग ना जवान फुटपाथ के।

जाग-जाग भइया हो छवलस लाली
एही लाल आग में जरी फटेहाली
एहो महावीर बल आपन खेआल करऽ
छाड़ अब भरोसा रघुनाथ के—तनी जाग ना जवान फुटपाथ के।

छिटकल = फैल गई। विहान = सवेरा। जाग न = जगो तो। लहकत = जलती हुई। तवँटल = तप्त। ताहि = उसी, उसी पर। एगो = एक भी। तोपनो = शरीर ढकने का कपड़ा। नइखे = नहीं है। तहरा = तुम्हारा। अफतिया = आफत, कष्ट। टटिया = टट्टी। जुलूमियाँ = जुल्म, कष्ट, उपद्रव। हेआत = हयात, जिंदगी या हया, शर्म। समइया = समय। ई त = यह तो। बिसुकरमा = विश्वकर्मा। से ही त = वही तो। फटेहाल = बुरी स्थिति वाला, दाने दाने का मुहताज। कँगूवना = कँगुरा, चोटी। फूसो = फूस, तिनका। खातिर = लिये। खखनेला = तरसता है। छछनेला = तरसता है। फटेहाली = गरीबी।

बगईचा में

●

गाँव के पुरुब वा मलिकवा के बगईचा राम
टिकोढ़ा चुने आवे रोज राधे रानियाँ।
बारह बरीस के ओकर बारी रे उमरिया राम
कि पागल बनावे ओकर आँखि के मोहिनियाँ।
साँवर सुरतिया के पोरे-पोरे कोमल राम
अंगे-अंगे फूटे सुघराई के कोंपल राम
उड़ल, उड़ल चले चाल, डेगे-डेगे भरे ताल
रहेले पयमाल ओकरा चाल पर हरिनिया
फूँकेला अगिन, लहलह, दुपहरिया
राधे त करत बाड़ीं आम के अगोरिया
का जाने पिआस लागे, का जाने तरास लागे
एही खातिर लेले बाड़ी लोटा भर पनियाँ
अँचरा में लेले बाड़ी चाउर कै खुद्दी
एक फाँका फाँकेली, बरेला गुदगुद्दी
राधे सब जानतारी नजर पहचान तारी
सचहूँ जवानी मधुमातल नगिनिया
केहू कहे सोना तूही, केहू कहे चानी तूँही
हाय रे जवानी एक दिन करबे बेपानी तूही
मने मने गनेली ऊ का ना बोल सुनेली ऊ
तीतो लागे मीठो लागे किसिम-किसिम बनिया।

●

मलिकवा = मालिक। टिकोढ़ा = आम का कच्चा व छोटा फल। बरीस = वर्ष। ओकर = उसकी। बारी = छोटी। मोहिनियाँ = मोहनेवाली। साँवर = साँवली। पोरे-पोरे = प्रत्येक गाँठ पर। सुघराई = सुंदरता। कोपल = कल्ला डेगे – डेगे = पग-पग पर। रहेले = रहती है। पयमाल = परेशान। ओकरा = उसकी। फूँकेला = फूँक देती है। लह लह = तपती हुई। त = तो। अगोरिया = रखवाली। पिआस = प्यास। तरास = कड़ी प्यास। चाउर = चावल। खुद्दी = छोटा कण। फाँका = ग्रास, कौर। फाँकेली = खाती है। जान तारी = जानती है। केहू = कोई। करबे = करोगी। का ना = क्या नहीं। तीतो = तीखी। किसिम = किस्म, भाँति।

श्री नगेंद्रमणि त्रिपाठी 'मंजुल'

जन्म—१ जुलाई, सन् १६४२ ई० ।

स्थान—कसया, देवरिया ।

शिक्षा—बी० ए० (प्रयाग विश्वविद्यालय) ।

साहित्य—'आज' और 'विहान' में आपकी रचनाएँ प्रकाशित होती रहती हैं ।

गीत

फरकल होठ, नथियवा ठरकल
ओरी तरे जुड़ाइल।
सखी अँगनवा ठाढ़ दुइज के—
निकलल चान पराइल ॥

अँखिया खोलि पलकिया मूँदे
घरी, घरी गोहरावे
गोहूँ, चना, मटरवा मिलि के
घर-घर व्याह रचावे

बन्न किवाड़ खिरिकियन राहे
अँगुठा खोल दिखावे
बन के बीच उदासी फूटे
मन के मीत जगावे

लेके नींद अँजोरिया डूबलि
राति अन्हरिया आइल
सखि अँगनवा ठाढ़ दुइज के
निकलल चान पराइल ॥

उठलि बयारि वेलि अँघुवाइलि
सुतल उतान मड़इया
पायल खोलि परोसिन झाँके
जइसे भरल गड़हिया

भाँवर पड़े भरोसन जोते,
बोवे ताल तलइया
पानी पकड़ि बदरवा ढोवे
दूरि पड़े अँगनइया।

टिकुली साटि सरेह फुलाइल .
सेनुर माँगि भराइल
सखी अँगनवाँ ठाढ़ दुइज के—
निकलल चान पराइल ॥

फरकल = फड़क उठा। नथियवा = नथिया, नाक में पहनने का गहना। ठरकल = हिल उठी। ओरी तरे = छप्पर के ढालुएँ किनारे के नीचे। ठाढ़ = खड़ी। दुइज = द्वितीया। चान = चाँद। पराइल = भाग गया, छिप गया। गोहरावे = पुकारती है। बन्न = बंद। राहे = राह, से, द्वारा। अँजोरिया = उजेली रात, चाँदनी। डूबलि = डूब गई। अन्हरिया=अंधेरी। बयारि = वायु। अँघुवाइल = उनींदी। उतान = चित। मड़इया = मंडप, झोपड़ी। पायल = पैर का गहना। गड़हिया = गड़ही, बड़ा गड्ढा। भरोसन = आशा तथा विश्वास पर। तलइया = छोटा तालाब। अंगनइया = आँगन। टिकुली = टिकली, पन्नी या काँच की बिंदी के आकार की टिकिया जिसे स्त्रियाँ लिलार पर लगाती हैं। सरेह = खेती से हरा भरा मैदान। सेनुर = सिंदूर। माँगि = माँग, सीमंत।

शरद गीत

मोरि पिछुअरवा फुलाइल गेनिया
सुनर सुरतिया सुघर रतिरनिया
गमकल मटिया जिनिस हरियाइल
आइल शरद लोलिनार।

फुलल गुलाव भँवर लपटाइल
पीअर गेनवा के पाँखि छितिराइल
लरिका सुताई धनी खोटेली धनिया
निक लागे भोर अगवार।

गरभल डीभिया डोलावैले गरवा
भरि बाँह चुरिया कमर भरि हरवा
हरिअर बँसवा हिरोह करे रतिया
सितिया के परल फुहार।

बन्हल ओहारि छुटल भिनुसहरा
अगिया जोगाई सुलगाई राखे गोहरा
भोरहि बलमुआ उठल अगुताइल
देला घुँघट मोर टार।

पिछुअरवा = घर के पीछे का भाग। गेनिया = गेंदा। सुनर = सुंदर। रतिरनिया = रात की रानी नामक फूल। जिनस = जिन्स, अनाज। लोलिनार = सुहावनी। पाँखि = पँखुड़ी। धनी = स्त्री। निक = अच्छा, भला। अगवार = घर के आगे का भाग। गरभल डीभिया = नया अंकुर। चुरिया = चूड़ी। हरवा = हार। हिरोह करे = याद में दुःख का अनुभव करती है। बन्हल = बँधा। ओहारि = ओहार, पर्दा। भिनुसहरा = भोर के समय। जोगाई = बचाकर। गोहरा = कंडा, उपला। बलमुआ = बल्लभ, प्रियतम। अगुताइल = आकुलतापूर्वक।

जन्म—१५ जुलाई, सन् १९४२ ई० ।

श्री चंद्रमासिंह 'चंद्र' ।

स्थान—समूदपुर, बलुआ, वाराणसी ।

शिक्षा—इंटर-मीडियट ।

साहित्य—भोजपुरी तथा खड़ी बोली की रचनाएँ विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित होती रहती हैं । कविता लिखने में आपकी विशेष रुचि है ।

बरखा कऽ रात

कइसे बरखा कऽ रतिया हम बिताईं बालमा।
बदरा बरसे मूसलधार,
टप टप चूवै घर – ओसार।
कइसे सूते खातिन खटिया हम दसाईं बालमा।
घरवा हो जाला चलनियाँ
कहवाँ होइहे अब रहनियाँ
कइसे दुखवा कऽ गीतिया हम सुनाईं बालमा।
ऐसन लागे सूनसान
बाटें तोहरा में धियान
कइसे तोहरा से नेहिया हम निभाईं बालमा।
जब से गइला पुरुब देस
एकहू भेजला ना सनेस
कइसे तोहरा के पतिया हम पठाईं बालमा।
जियरा मोर घबराय
हमका सूझे ना उपाय
रखिके हँसुली के बन्हकवा घर छवाईं बालमा।

कइसे = कैसे, किस प्रकार। ओसार = ओसारा, बरामदा। खातिन = खातिर, लिये। दसाईं = बिछाएँ। चलनियाँ = चलनी की तरह छिद्रवाला, जर्जर। कहवाँ = कहाँ पर। रहनियाँ = रहने का ठिकाना। ऐसन = इस प्रकार। धियान = ध्यान। सनेस = संदेश। पतिया = चिट्ठी-पत्री। बन्हकवा = बंधक, गिरवी।

झाँके गोरी टारिके ओहार

गोरिया कऽ डोलिया चलल पिया सँगवा कि,
रोवतिया अँचरा पसार।
रुकि गइली डोलिया रे गँऊवाँ के गोइड़वाँ कि,
झाँके गोरी टारि के ओहार।

उझकि – उझकि गोरी निरखेले गऊवाँ।
रोवैले डहुरि लेइ बाबा कऽ नऊवाँ।
हमरी नगरिया तऽ भइली सपनवाँ,
कोखिया में भइलन विरथा जनमवाँ।
सुन सुन भइया तनी अगिला कहरवा रे,
डोलिया कऽ मुहवाँ उघार।

मयवा पपिनियाँ दरदियो न जाने,
मिलती मउतिया रे कउनों बहाने।
केकरा से भउजी ठठोली अब करिहैं,
बिरहा अगिनियाँ में रोइ रोइ जरिहैं।
बिरना बहिनियाँ बिसारी घर सून कइले,
माइ करिहैं केकरा दुलार।

गुड्डही के खेलि खेलि भइली सयनवाँ
चढ़ल बयसिया का बदलल जमनवाँ
यक गाँव छुटलैं दुसर गाँव मिलिहैं
माइ कऽ दुलार हमका रात दिन सलिहैं
छतिया से दूरि दूरि भागेला धिरजवा कि,
करि अब केकरा गुहार।

रोवतिया = रो रही है। अँचरा पसार = आँचल फैलाकर, जार बेजार। गोइड़वाँ = निकट, पास। ओहार = पर्दा। उझकि = झाँककर। डहरि = राह, मार्ग। नउवाँ = नाम। बिरथा = व्यर्थ। कोखिया = कोख। तनी = तनिक, थोड़ा। मयवा = माया, मोह। दरदिया = दर्द। मउतिया = मौत। कउनों = किसी। केकरा = किससे। ठिठोली = मजाक। बिरना = भाई। गुड्डही = गुड्डा गुड्डी (का खेल)। बयसिया = (वयस्) उम्र। दुसर = दूसरा, अन्य। सलिहै = खलेगा, शूल पैदा करेगा। धिरजवा = धीरज, धैर्य। केकरा = किसका। गुहार = दुहाई, रक्षा के लिए पुकार।

जन्म—६ जनवरी, सन् १९२१ ई०। श्री मुख्तारसिंह 'दीक्षित'

स्थान—जखनियाँ, गाजीपुर।

शिक्षा—इंटरमीडियट।

साहित्य—भोजपुरी तथा खड़ी बोली की कविताएँ पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित होती रहती हैं। भोजपुरी कविताओं का एक संग्रह यथाशीघ्र प्रकाशित होनेवाला है।

गीत

अगमग जरेले किरिनियाँ के बाती,
अँगना में आवेला अँजोर।
चनियाँ के चदरा चनरमा बिछावे।
जोन्हियाँ के अँग-अँग गहना गुहावे।
गोरकी के बढ़ि जाले आजु वड़कई।
बुलुक, बुलुक बुलकावेले करियई।
अँखिया से आवेले अँसुइया के धरिया
ओसिया ओही के हवे लोर॥

झुरु, झुरु झुरुकेले पुरुवी बयरिया।
ओढ़िके अँजोरिया के सोवैले डगरिया।
पिपरा त पटकेला पट, पट पाती।
मेल्हले बउलिया उतान होले छाती।
हर, हर करेला नहरिया क पनियाँ
मनवाँ में उठेला हिलोर॥

राति असमनवाँ क अँचरा दसावे।
तरई के गुहि, गुहि गजरा बनावे।
पहिनि सफरिया में जइहें सजनवाँ।
सुन होइ जाइ मोर भरल भवनवाँ।
पियवा के निक लागे पछिमी बनिजिया,
चलि देलें होला जब भोर।

बैरी सुरुजवा क बेधेले नजरिया।
सुकुली क बिगरेले बनलि बजरिया।
लुटि जाले तरई से भरलि तिजोरिया।
रतिया क टूटि जाले पट से पँजरिया॥

लाल लोहिया क लहके अगिनियाँ
सगरों मचेले कउवा रोर।

●

चनियाँ = चाँदी। चनरमा = चंद्रमा। जोन्हिया = ज्योत्स्ना, चाँदनी। बड़कई = बड़प्पन। बुलुक बुलुक बुलकावेले = बल्क बल्क कर रोती है। ओसिया = ओस की बूँदें। लोर = आँसू। झुरु झुरु = धीरे धीरे। झुरुकेले = बहती है। अँजोरिया = चाँदनी। मेल्हले बउलिया = बावली का पानी हिलता-डुलता है। हिलोर = उमंग। दसावे = सजाती है। तरई = तारे। गजरा = माला। सफरिया = सफर, यात्रा। सुकुली = शुक्र तारा। बनिजिया = (वाणिज्य) व्यापार के लिए परदेश गमन। पँजरिया = पंजर। सगरों = सर्वत्र। कउवा रोर = पक्षियों का कलरव, शोरगुल।

गीत

जिनि करा ;आन 'क भरोस।
दुसरे क आसि जइसे तड़वा क छँहिया।
कुछु नाहीं ठीक घटि हटि जाइ कहिया।
पनियाँ के दौड़ेला लूहि में पियासा।
नाचि नाचि घमवाँ पढ़ाइ देला झाँसा।
मिरिगा मरेला निरदोस।
आन की कमाई पर कवन निहोरा।
दमड़ी न देइ दाँत, केतनो निपोरा।
अपनी जवनियाँ क जोर अजमावा।
थोरी सा जिनिगिया में जँगरा चलावा।
अब से सम्हारा पिया होस।
हाथ गोड़ मोड़ि जब जिउवा बचइवा।
बतिया बिगरले बहुत पछतइबा।
नाँव पर थूकी सब नकिया सिकोरी।
गाँव, घर सब लोग लेई मुँह मोरी।
मरि जइबा मनवाँ मसोस।
खटनी से चुई जब देंहि से पसेनवाँ।
उहे बनी मुनरी क हमरे नगिनवाँ।
दउड़ि, दउड़ि लोग नेहियाँ लगाई।
छँहियाँ मतिन तोहरे पीछे पीछे धाई।
जोरी पिरितिया परोस।

आन = अन्य, दूसरों। आसि = आशा। कहिया = किस दिन। लूहि = लू, गर्म हवा। मिरिगा = मृग, हिरन। जँगरा = शरीर का बल। खटनी = काम में खटने का श्रम। मुनरी = मूँदरी, अँगूठी। नगिनवा = नग। छँहियाँ = छाया। मतिन = समान। परोस = पड़ोस के लोग।

श्री हरिहरप्रसाद पाठक

जन्म—माघ कृष्ण १४, संवत् १९९३वि० ।

स्थान—पठकौली, आजमगढ़ ।

काशी हिंदू विश्वविद्यालय से सन् १९५९ ई० में एम० ए० (हिंदी) ।

साहित्य—भोजपुरी तथा हिंदी की रचनाएँ, विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित होती रहती हैं ।

मुक्तक

लोग कहेलें कि हम बड़ा पाप करीला,
कि तोहरे मन से अपने मन के मिलाप करीला।
अपनी अँखियन के तार गूहीं अँसुअन के माल,
ओही माला से तुहार नित जाप करीला ॥ १ ॥

हमरी बानी कै सिंगार तुहार नाम भयलबा,
हमरी खातिर तुहार नँउऍं राम – राम भयलवा।
तुहरी सुधिये में हम गाईं गीत, हे हो मीत!
तुहार घरवे हमार चारों धाम भयलबा ॥ २ ॥

●

तुहार = आपका। जाप = जप। भयलबा = हुआ है। खातिर = लिये। नँउएँ = नाम ही। तुहरी = आपकी। सुधिये = स्मृति ही, याद ही।

गीत

मीठे – मीठे मुसुकाला सखि हो चान राति भर।
चाँन धीरें – धीरें आवें
अँगना चाँनी से मढ़ावें
उँढ़ें मथवा – उपराँ सइयाँ के निसान राति भर।
मीठे–मीठे० ॥

नीचे वहें गंगा माई
जेकर नीर सुखदाई
चाँन करें लहरि टारि के नहान राति भर।
मीठे – मीठे० ॥

फूल तरई के मँगावें
पियवा केसिया रचावें
सूरुज – अइसन मुहवाँ करेला बिहान राति भर।
मीठे – मीठे० ॥

फेंकें प्रीति – किरन के डोरी
हँसि के चूमें गोरि गदोरी
निंदिया कइले रहे अँखिया से कसान राति भर।
मीठे – मीठे० ॥

परे पाला देह कँपावे
मनवाँ मारल – मारल धावे
डोले डगमग हमरे मन के मचान राति भर।
मीठे – मीठे० ॥

●

सइयां = स्वामी। निसान = निशान, चिह्न, झंडा। जेकर = जिनका। तरई = तारे। अइसन = ऐसा, समान। गदोरी = हथेली। कसान = खिंचाव, खींचातानी। मचान = मंच।

जन्म—१७ दिसंबर, १९४२ ई० ।

दिङ्नाग श्री दीनबंधु

स्थान—कस्बा जमानियाँ, गाजीपुर ।

शिक्षा—विज्ञान से इंटरमीडियट, काशी हिंदू विश्वविद्यालय । छात्र—(स्नातकीय कक्षा), बुद्ध डिग्री कालिज कुशीनगर, देवरिया ।

साहित्य—हिंदी साहित्य की नई विधाओं के लेखन तथा भोजपुरी गीत एवं कविताएँ लिखने में विशेष रुचि ।

बिआह के गीत

माड़ो के उपराँ उगल एक चाँन हो,
निचवाँ दुलारी हमार लजवंती ॥
दियना के रूप रंग लिहले परकास हो।
घर – घर में सोभे हमार लजवंती ॥
गंगा के थिर जल जस लिहले सुभाउ हो,
निरमल मन भोली, हमार लजवंती ॥
केतना बताई बस समझीं गुनवंती हो,
लछिमी ह गिहिथिन, हमार लजवंती ॥
माड़ो के उपराँ उगल एक चाँन हो,
निचवाँ दुलारी, हमार लजवंती ॥

*

माड़ो = मंडप। उगल = उदित हुआ है। चाँन = चंद्रमा। लिहले = लिये हुए। सोभे = शोभित होती है। थिर = स्थिर। केतना = कितना। गिहिथिन = (गृहस्थिन) कुशल गृहिणी।

नाच के गीत

सजना हमार मन चाहे गहनवाँ॥
अँगुठी बा सोने क उज्जर करधनियाँ
गोड़वा में बिछिया बा नाहीं पैजनियाँ,
कवनो ना मिलिहें हो तोहके बहनवाँ;
हो, सजना हमार मन…
हँसुली तऽ भारी बा हल्लुक बा हरवा
नथिया न बाटे ना पास अइरनवाँ,
हँसुली तोड़वाई बनवा दऽ कँङनवाँ;
हो, सजना हमार मन…
खरचा ना सपरे तऽ लेलऽ उधार भाव
चानस बा अच्छा अब देदऽ हमार दाव,
चउरा पुरान बेचि करजा निपटावऽ;
हो, सजना हमार मन…
सजना हमार मन चाहे गहनवाँ॥

●

उज्जर = (उज्ज्वल) अर्थात् चाँदी की। करधनियाँ = कमर में पहनने का एक गहना। बिछिया = पैर की उँगलियों में पहनने का एक प्रकार का छल्ला। पैजनियाँ = पैजनी, बजनेवाला एक गहना जो पैर में पहना जाता है। तोहके = तुमको। हँसुली = गले में पहनने का एक गहना। हल्लुक = हल्का। हरवा = हार। नथिया = नाक में पहनने का गहना। अइरनवाँ = (इयरिंग) कान का गहना। कँङनवाँ = कंगन। सपरे = पार लगे। चानस = (चांस) मौका, अवसर। चउरा = चावल।

श्री रामदेव द्विवेदी 'अलमस्त'

स्थान—मधुवनी, दुबेटोला, चंपारन।

शिक्षा—एम० ए० (हिंदी)।

साहित्य—प्रकाशित पुस्तक—

उदयन (काव्य)।

भोजपुरी व खड़ी बोली में रचनाएँ प्रकाशित होती रहती हैं।

बकुला भगत

चलले बकुलऊ सिकार खेले भारी।
'अब त मछरियो ना भाखन सुनत बा
पोठियो गुनत नइखी कहनी हमारी !'
ऊँचे तकथ पर आसन जमवले
पाँख लागल मात करे चमकत कटारी।
'जय हो मछरियन के, सबकर उदय हो !
तनकी ले अउरी घुसुकि आईं आरी !'
"पुर्बिज का पापे से हम भइनीं बकुला
ना त जरी के हम हईं बरहमचारी !'
भगत का भेख पर मछरी मोहइली
जेकरा पर छोह करे जनता ओ नारी !
भगतजी अपना हवाई जहाज पर
ले गइलन बहुतन के सरगे दुआरी।
हाल सदाबरत के केंकड़ा बहादुर
समुझि पिजा लिहले सिउँठा दुधारी !
'हमरा से मामा, नराज काहे भइनीं
रउरे चरन लागल नेहिया हमारी !'
मामा दुलार से कान्हें चढ़वले
भगिना परेम से चला दिहलें आरी !

भाखन = भाषण। पोठियो = एक प्रकार की मछली। तकथ = तख्त। तनकी ले = तनिक सा, जरा सा। अउरी = और। आरी = पास। पुर्बिज = पूर्व जन्म। ना त = नहीं तो। जरी = मूल। बरहमचारी = ब्रह्मचारी। मोहली = मोहित हो गईं। जेकरा = जिसपर। छोह = मोह। सरगे = स्वर्ग के। सदाबरत = सदाव्रत, खैरात। पिजा = पिजाना, तेज करना। केंकड़ा = कर्कट। सिउँठा = केंकड़े का पंजा। दुधारी = दो धार का। रउरे = आपके। चरन = चरण। भगिना = बहन का लड़का। आरी = एक औजार।

बिलाई भगतिन

उज्जर चदरिया के ओढ़ि रामनामी
माथा पर मछरी के भसम रमा के
बिलाई भइली भगतिन
आसन जमा के!
घोंघन के चुनि-चुनि माला बनवली
गवें-गवें फेरे लगली दुम सुटुका के!
एक दिन मूसन के मिटिंग बोलवली
गाँव का बगैचा में मंडप रचा के!
एने-ओने ताकि-तुकि आँख मटकवली
भाखन के तोब दिहली छोड़ सरिया के!
'हम हईं रे बबुअन तोहन के नानी
ना भावे बात, पूछऽ पुरखन से जाके!'
'तोहन कारन हम भइनीं जोगिनियाँ
रोज फरहार करीं गंगा नहा के!'
'तबहूँ ना बात मानऽ तोहन ए मुअनूँ
हमरे के वोट दे दऽ एक-एक गिना के!'
चूहन का वोट से बिलाई भइली रानी
लगली सिकार खेले घर में समा के!

गवें-गवें चूहन के चट करे लगली
लिहली फुलाय पेट सय चूहा खा के !
आखिर में एक दिन फूटल भंडा
वँड़वा नचोर लिहलसि मुँह खिसिया के !
केहू धइलसि अहुँचा केहू धइलसि पहुँचा
होखे लागल भगतिन के सेवा बना के !
जनता ना मानेला कहला से भइया—
आखिर में दम लेला सरगे ठेका के !

●

बिलाई = बिल्ली। घोंघन = घोंघे। गवें-गवें = धीरे-धीरे। सुटुकाके = दबाकर। एने-ओने = इधर-उधर। ताकि तुकि = ताक झाँक कर। तोत्र = तोप। सरिया के = सँभालकर। हईं = हैं। तोहन = तुम लोगों। पुरखन = पूर्वज। फरहार = फलाहार। मुअनू = एक प्रकार की गाली। सय = शत, सौ। नचोर = नोच लेना। अहुँचा – पहुँचा = हाथ की कोहनी के नीचे का भाग। सरगे ठेका के = स्वर्ग पहुँचाकर।

जन्म—माघ, शुक्ल पक्ष, सं० १६८४। **श्री कमलेश**

स्थान—सिताब दियर, बलिया।

शिक्षा—इंटर, विशारद।

साहित्य—आपकी बंगला रचनाएँ, कलकत्ता रेडियो से प्रायः प्रसारित होती हैं। भोजपुरी कविताएँ पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित होती रहती हैं। आजकल आप भोजपुरी चित्रों में गीत लिख रहे हैं। शीघ्र ही 'कृषक बंधु' खंडकाव्य प्रकाशित होनेवाला है। रूस में आपके चार बैले भी बिहार इप्टा द्वारा प्रदर्शित हो चुके हैं।

शरद गीत

करिया बदरिया के घुँघटा हटा के
मुसुकाइल शरद-रितु गोर ॥
गरमी गइल बरसात बुढ़ाइल
नदिया के रेता कसौंजा फुलाइल
भूआ के छीर समुंदर में हेरे
आपन सँवरिया किशोर ॥
पुरुआ के पेंग पर पछुआ पताइल
बदरी के फाहा में चाँद लपटाइल
सुंदर सेजरिया पर सुतल सनेहिया में
सिहरी जे भरे ले हिलोर ॥
पाँकी पोछा गइल सुतल धरतिया पर
डुगरेला खंजन के गोल,
गोरिन के गोलवा जे डुगइल कटनियाँ में
लागल बा अँखिया में होड़ ॥
उपरा से तानल बा उज्जर चदरिया
निचवा पर सबुजी ओहार,
नीचे धरतिया पर धान रानी झूमस
मँगिया पर सलमा सीतार ॥
ताल-तलैया के निरमल पानी
धोवत बदन गोरी घोरे जवानी,
चाँद शरम से ऊपर पराइल
बन के देखत बा चकोर ॥

पुरुब परी फजिरे मुसुकाके
खोललसि जब आपन सिन्होरा,
खुलल डगरिया, नगरिया, बजरिया के
बटिया खुलल चारु ओर ॥

शरद -सुहागिन, सरस रस मातल
सब दिन बढ़ो एहवात,
दुधे नहइहऽ तूँ पूते फरिहऽ
इहे बा लालसा मोर ॥

●

करिया = काली। बदरिया = बदली। कसौंजा = काँस, घास विशेष। भूआ = काँस का फूल, घूआ। पाँकी = पंक, कीचड़। डुगेरला = धीरे धीरे चलता है। कटनिया = फसल की कटाई। झूमस = झूमती है। सलमा सितार = सोने चांदी का गोल लपेटा हुआ तार जो बेलबूटा बनाने के काम आता है, बादला, चमकी। पराइल = भाग गया। फजीरे = प्रातःकाल। सिन्होरा = सिंदूरदान। बटिया = बाट, मार्ग। एहवात = सौभाग्य।

मुक्ति

●

सास देली ठोनहच ताना दे ननदिया
पिया परदेसी भइले कइके बिरहिनिया,
गोली अइसन बोली लागे, कुहुँके करेज मोरा
नगर के लोग जब कहेला बँझिनिया,
बल - बउसाव बइठल जियते मउअत मीलल
मटिया में मिलि गइली सोना के जिनिगिया,
एक मन करेला जहर खाइ मरितीं
दोसर मन करेला कि होइतीं जोगिनिया ॥
पातर गोरी जस लवँग के डढ़िया
लचि के भइल जइसे नवल धनुहिया,
भूँइया चूमेला लामि केस झाँपि अँखिया
मुनुक अँगुरिया में पटुआ के डोरिया;
अधजल गगरी, छलकि - छलकि जाला
कुँइया से कइसे खींची भरल घइलिया,
भइया के दुलारल देह, भउजी के सँवारल नेह
पनिया भरत झँखे कुँइया पर गोरिया ॥
लटकल-लट कहे; चुप रहु चुप गोरी
हम खींचि उपर करब भरल घइलिया,
पपनी के पानी कहे, पथर-पखान बनि,
जिनगी हलुक होई, फोर दे घइलिया,
छैला-चिकनियाँ रे गाँव के जवान कहें
काहे सहऽ मार गोरी एही रे उमरिया,
केकर कहल करीं केकरा पर आस करीं
अपने जिनिगिया जब भइली बैरिनिया ॥

चिहुँकि - चिहाइ माथा ठोक के बईठ गइली
सरकल डोरी जब डुबल घइलिया,
बोझ से दवल भारी अनबोल घइली
बंधन छोड़ाय आपन कटली फँसरिया,
मने-मने हँसलि मुसुकाइल गोरी ओठवा पर
डर-भय छोड़ि, हम काटवि आजु फँसरिया,
(तऽ) सास देंसु ठोनहच, ताना दे ननदिया
पिया परदेसी होंखसु करके बिरहिनियाँ ॥

ठोनहच = ताना भरी फटकार। बँझिनिया = वंध्या। बउसाव = व्यवसाय, उद्योग, पराक्रम। मउअत = मौत। दोसर = दूसरा। डढ़िया = शाखा। धनुहिया = धनुष। लामि = लंबी। झाँपि = ढँककर। सुबुक = (फा०) पतली और सुंदर। जाला = जाती है। कुँइया = कुँआ। घइलिया = घड़ा। झँखे = कलपती है। पपनी = पलक। हलुक = हलकी। चिकनिया = शौकीन, बाँका। केकरा = किस (पर)। चिहुँकि चिहाइ = चौंक कर तथा आश्चर्यचकित होकर। सरकल = नीचे की ओर खिसकी। डुबल = डूब गई, भर गई। फँसरिया = फाँस, बंधन। होंखसु = हो, हो जाय।

जन्म—१२ जून, १९२५ ई० ।

श्री गिरिजाशंकर पांडेय

स्थान—विश्वनाथ गली, काशी ।

शिक्षा—शास्त्री, एम० ए०, एल-एल० बी० ।

साहित्य—कविता—ग्रामिणी, चूड़ामणि ।

उपन्यास—चेतसिंह का सपना, अठारह वर्ष बाद ।

नाटक—खलक खुदा का ।

अनुवाद—डब्रोवस्की (मूल लेखक पुश्किन) ।

टीका—रामचरित मानस ।

विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित गीत, कहानियाँ, निबंध और शोध-लेख तथा काशिका भोजपुरी में कविताएँ । दैनिक सन्मार्ग, मासिक शांतिदूत तथा छायालोक का संपादन ।

गजल

धोखा गरूर कऽ जब बरबाद हो गयल
असली सरूप तब तोहार याद हो गयल।

कहलन पुरान – वेद पै सुनली न कोई कऽ,
ठोंकर जऽलगल, आपै तब याद हो गयल।

पचड़ा में पड़के गइली रस्ता तोहार भूल,
रस्तौ जौ बंद देखली, तब याद हो गयल।

दुनिया कऽ पता नाहीं, अइसन नसा भयल,
मस्ती उतर गइल जब, तब याद हो गयल।

जड़ बन के परल रहली, जब ले सवार नींद,
औचक जऽ आँख खोलली तब याद हो गयल।

★

गयल = गया। सरूप = स्वरूप। तोहार = तुम्हारा। कहलन = कहा। पै = लेकिन। आपै = अपने आप। पचड़ा = व्यर्थ की बातें। रस्तौ = रास्ता भी। अइसन = ऐसा। परल रहली = पड़ा था। ले = तक। औचक = अचानक। जऽ = जब।

ए मन !

मुहब्बत के न रहे ज्ञान, अ' कुछ सूझै नाहीं,
लाख समझावा, मुदा ऊ बूझै नाहीं।
गलती जौ कै वइठल, नदान बटलै बा,
मगर तोके त ए मन ! कुछ समुझै चाही।

बनै वालन के वनवली, अ' देखवली रस्ता,
शान वालन के झुकवली, अ' न भइली सस्ता।
अपने के भी हम आज तक कुछ मानत रहली,
लेकिन ई न जनली कि तू बाटऽ खस्ता।

आँधी न डिगवलेस – न झुकवलेस पाला,
गरदन में आदर कऽ पड़त आयल माला।
घुमा के ले अइलऽ तू हमैं कवन गली !
एक नजर कऽ चोट जहाँ कइलेस मतवाला।

बहुत घोखा भयल रे मन, तोहें पतियइले से,
अब भरोसा न तोहरे लाख कसम खइले से।
जिन्नगी भर कऽ थाती लुटल, बेदाम, चट से,
ओनके गली में गइले अ' मुसकिअइले से॥

●

सूझै नाहीं = दिखाई नहीं देता। मुदा = लेकिन। बूझै नाहीं = समझता नहीं। नदान = नादान, नासमझ। बटली वा = है ही। तोके = तुमको। त = तो। समुझै चाही = समझना चाहिये। बनै वालन के = बननेवालों को। रस्ता=रास्ता। भइली = हुआ। मानत रहली = मानता था। न जनली = नहीं जानता था। बाटऽ = हो। डिगवलेस = डिगा सकी। आयल = आया। ले अइलऽ = ले आए। कवन = कौन। कइलेस = किया। पतियइले से = विश्वास करने से। तोहरे = तुम्हारे। जिन्नगी = जिंदगी। ओनके = उनकी। गइले से = जाने से। मुसकिअइले से = मुस्कराने से।

राहगीर

जन्म—संवत् १९७१ वि० ।

स्थान—मधुरिया, फाजिल नगर, देवरिया।

शिक्षा—प्रारंभिक शिक्षा के बाद स्वतंत्रता-संग्राम में सक्रिय भाग, स्वतंत्र अध्ययन, विभिन्न साहित्यिक संस्थाओं तथा पत्र-पत्रिकाओं में कार्य। कार्यक्षेत्र काशी।

साहित्य—निम्नलिखित पुस्तकें प्रकाशित हैं—

१—आधुनिक भोजपुरी गीत और गीतकार।

२—भोजपुरी के नये गीत और गीतकार (आपके हाथ में है)।

३—गाँव की लोककथाएँ।

४—गाँव की कहानियाँ।

अप्रकाशित पुस्तकें—

१—राहगीर के गीत।

२—शिक्षाप्रद लोककथाएँ।

बसंत

आइल बसंत रितु आइल रे, हमरे दुवरा पर चाँन अगराइल रे।
जउवा के खेतवा पर चढ़लि जवनिया,
गेहुँआ पर बरसल सोनवाँ के पनिया,
बुटवा में तिसिया धधाइल रे, आइल बसंत रितु आइल रे।
हरियर लहँगा में झमके मसुरिया,
खड़े खड़े घुघुरा बजावेले रहरिया,
मटरा के दिनवा धराइल रे, आइल बसंत रितु आइल रे।
महकि महकि बहे मातलि बेयरिया,
नाया नाया पात फुटे निविया के डरिया,
पतझर रंग में रँगाइल रे, आइल बसंत रितु आइल रे।
बहुत दिनन पर आइल मधुमसवा,
तन मन बीच लहराइल हुमसवा,
सारी बन बरिया फुलाइल रे, आइल बसंत रितु आइल रे।

चान = चाँद। अगराइल = प्रसन्न हुआ, खिल उठा। जउवा = जौ (का खेत)। जवनिया = जवानी, यौवन। बुटवा = चना। धधाइल = खिल उठी। मसुरिया = मसूर, एक प्रकार का अन्न। घुघुरा = घुघुर अर्थात् अरहर की फली। रहरिया = अरहर। मटरा = मटर। दिनवा धराइल = दिन पूरे हो गए अर्थात् मटर पक चली। बेयरिया = वायु, हवा। मधुमसवा = वसंत। हुमसवा = उल्लास। बरिया = वारी, वाटिका।

बाबू कुँवर सिंह

धनी धनी रे ओही माई के कोखिया,
धनी धनी रे ओही गउवाँ के मटिया,
जहाँ लोटि पोटि खड़ा भइलँऽ कुँवर सिंह।
कौने घरे जनम लिहलें बाबू कुँवर सिंह॥

खुनवाँ में रंग चढ़ल पानी तरवरिया,
तन पर जवानी चढ़ल हाथ में दुधरिया,
मन में उमंग मुसुकइलें कुँवर सिंह।
कौने घरे जनम लिहलें बाबू कुँवर सिंह॥

कइलस जुलुम जोर देस पर विदेसिया,
बन के लुटेरा उतरल फौजी फिरंगिया,
जुलुम कहानी सुन के तड़पें कुँवर सिंह।
कौने घरे जनम लिहलें बाबू कुँवर सिंह॥

नगर गाँव लूटि फूकि दिहलसि फिरँगिया,
सुनि सुनि कुँवर हिरदय लागलि अगिया,
नंगी तरवारि लेके गरजें कुँवर सिंह।
कौने घरे जनम लिहलें बाबू कुँवर सिंह॥

सुमिर भवानी कुँवर उतरे मैदनवा,
देखि के फिरंगियन के काँपे लागे तनवा,
गाजर मुरई जस काटे लागें कुँवर सिंह।
कौने घरे जनम लिहलें बाबू कुँवर सिंह॥

सिह जस गरजे बिजुरी, तड़पे ओही तनवा ,
कायर लुकइलँऽ दुसमन आवें न समनवा ,

आगे जे भइलें काटत गइलें कुँवर सिंह ।
कौने घरे जनम लिहलें बाबू कुँवर सिंह ॥

नाही सुझि परे तरवारि के डगरिया ,
पुरखन के राखि लिहलें माथ के पगरिया ,

मर के अमर बनि गइलें कुँवर सिंह ।
कौने घरे जनम लिहलें बाबू कुँवर सिंह ॥

●

कोखिया = (कुक्षि) कोख, उदर । मटिया = मिट्टी । दुधरिया = दो धार की तलवार । कइलस = कर दिया । बिदेसिया = अँगरेज । फिरंगिया = अँगरेज । मुरई = मूली । पुरखन = पूर्वज । पगरिया = पगड़ी, मर्यादा । बनि गइलें = बन गए, हो गए ।

सिपहिया बनि के ना

[गाँव का एक साधारण घर। युवक पति-पत्नी परस्पर बातें कर रहे हैं। दुश्मन सीमा पर आ जाता है। कुछ भारतवासी उसके भेदिये का कार्य कर रहे हैं। यह जानकर पति सेना में जाने की इच्छा प्रकट करता है। पत्नी उसका अनुमोदन करती है। इसी वार्ता को एक लघु संगीत रूपक द्वारा प्रस्तुत किया गया है जिसमें चार शैलियाँ भोजपुरी की हैं और एक मार्चिंग संगीत खड़ी बोली में है।]

स्त्री—(धुन पूर्वी)

भारत देसवा में घुसि गइलें चोरवा रे,
भेदिया भइलें भारतवसिया,
सुनि ए लोगें।

पहिले चोरावे चोरवा माई के मुकुटवा रे,
करे लागे उलटे उत्पतिया,
सुनि ए लोगें।

कइलें नाता तोड़ उहे करनी से अपना रे,
कइके बिसवसवा के घतिया,
सुनि ए लोगें।

पुरुष—(धुन बिरहा)

मारी के भगइबे हम भारत भूमिया से,
घर - घर में उठल बा आवाज।
भरि उछाह दुसमनवा पर टूटबे,
चिरइन पर टूटे जइसे बाज॥
कइके लड़ाई उनके भरि देबे मनवाँ,
बचि नाहीं पइहें करिहें कवनो जतनवा,

काटि के बिछइबें उनके ओही रनभूमिया से,
काटि के बिछावे जइसे खेतवा किसनवा।
चलत बाटे घर - घर से छैला - छबिलवा हो,
जूझे खातिर देसवा के काज।

स्त्री—(धुन कहरवाँ)

सँइया जा - जा तू लड़इया में सिपहिया बनि के ना।
सँइया राखिलऽ अजदिया, सिपहिया बनि के ना॥

जइबऽ तू लड़इया में, कमइबऽ खूब नउवाँ,
गइहें सब जसवा, चमकि जइहें गउवाँ,

इहे भेजिहऽ तू कमइया में, सिपहिया बनि के ना।
सँइया जा - जा तू लड़इया में, सिपहिया बनि के ना॥

मिलल बड़े भगिया से, आज इहे जोगवा,
देखि के पोसकिया, निहरिहे सब लोगवा,

सरग ले आवऽ, मड़इया में सिपहिया बनि के ना।
सँइया जा - जा तू लड़इया में, सिपहिया बनि के ना॥

जा - जा तू जलदी में, करि हऽ मति देरी,
सँगवा में लेलऽ आपन संगी - सँगेरी,
सुवहा नाहीं बा बिजइया में, सिपहिया बनि के ना।
सँइया जा - जा तू लड़इया में, सिपहिया बनि के ना ॥

पुरुष—(धुन जोगिया)

चलऽ हो 'चोकट' भाई सुराज के बचाई जा।
दुसमन के मारी - मारी देस से भगाई जा ॥
कहाँ बाटें 'घुरहू' काका,
कहाँ बाटें 'निरहू' चाचा,
जलदी आवऽ 'पलटू' दादा 'झगडुआ' के बुलाईं जा।
कहाँ गइल 'लगना' 'भगना'
कहाँ बा 'रामचरना' 'सरना'
'घरघुमना' के भेजि के, 'जुझरना' के बुलाईं जा।
आइल बाटें 'रमई' काका,
कहाँ बाटें 'सुकई' चाचा,
तुहु आवऽ 'बलई' बाबा 'खदेरना' के बुलाईं जा।
चलऽ हो ! 'चोकट' भाई, सुराज के बचाईं जा ॥

●

बिसवसवा के घतिया = विश्वासघात। उछाह = उत्साह। चिरइन = चिड़ियों। जतनवा = यत्न। जूझे = लड़ने-मरने। जसवा = यश। इहे = यह। जोगवा = सुयोग, अवसर। पोसकिया = पोशाक। मड़इया = झोपड़ी। सँगेरी = साथी।

गाँव के साथियों को बुलाकर, (एक स्थान पर इकट्ठे हो जाते हैं)

सभी मिलकर—

स्वतंत्र भारत की जय!
भारत माता की जय!

मार्चिंग—

चले चलो! बढ़े चलो! बढ़े चलो!
बढ़े चलो!

कदम कदम मिला के चल
संगीन को उठा के चल
दुश्मनों को बीन कर
भूमि अपनी छीन कर
चले चलो! बढ़े चलो! बढ़े चलो!
बढ़े चलो!

चैन तभी लेंगे हम,
भूमि नहीं देंगे हम,
अब न रुकेंगे कदम,
खायेंगे कभी न खम,
चले चलो! बढ़े चलो! बढ़े चलो!
बढ़े चलो!

तोड़ कर सभी भरम
छोड़ कर सभी धरम,
बाढ़ पर रहेंगे हम,
गोलियाँ सहेंगे हम,
चले चलो ! बढ़े चलो ! बढ़े चलो !
बढ़े चलो !

शत्रु का मिटे फसाद,
इन्कलाब जिंदाबाद
इन्कलाब जिंदाबाद
जिंदाबाद
जिंदाबाद

●